❖ वर्ष 51 ❖ अंक 01 ❖ जनवरी 2024

₹ 25/-

हँसती दुनिया

नव वर्ष की शुभकामनाएं

हँसती दुनिया

वर्ष 51 • अंक 01 • जनवरी 2024 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री राकेश मुटरेजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्पलेक्स, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : डॉ० विजय शर्मा

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
editorial @ nirankari.org
Website : www.nirankari.org

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. अनमोल वचन
40. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
50. रंग भरो

चित्रकथायें

12. चित्रकथा
34. किट्टी

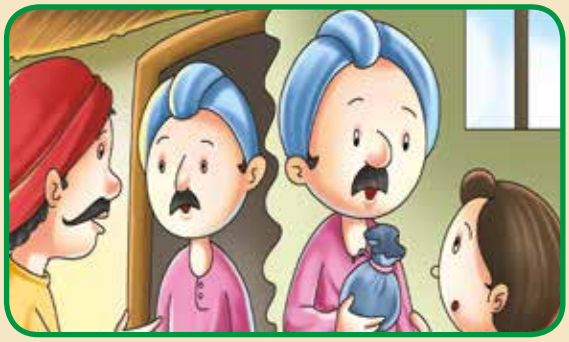

हँसती दुनिया

कहानियां

कविताएं

7. मैं सीमा पर जाऊँ
– घमण्डीलाल अग्रवाल

11. आया है नववर्ष
– डॉ. बच्चन पाठक

19. गणतंत्र के गीत गाएँ
– राजकुमार जैन 'राजन'

33. नया साल
– विद्या प्रकाश

41. आ गया फिर जाड़ा
– बद्री प्रसाद वर्मा

41. सर्दी की बात
– सुनील कुमार शर्मा

47. हमको सैर कराती
– डॉ. परशुराम शुक्ल

8. स्वतंत्रता सभी को प्रिय
– बलतेज कोमल

10. सबसे अच्छा
– डॉ. श्याम मनोहर

20. रूठ गई किताब
– दर्शन सिंह 'आश्ट'

27. भावना से कर्तव्य ऊँचा
– जगदीश कौशिक

28. पढ़ने की लगन
– मदन कोथूनिया

32. तिलक ने ली सीख
– दीनदयाल मुरारका

38. गलती
– प्रियंका

46. होड़
– हरदर्शन सहगल

विशेष/लेख

16. गाजर
– कैलाश जैन

18. फॉग और स्मॉग
– आसिफ अंसारी

24. जगदीश चन्द्र बोस
– हरजीत निषाद

26. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
– घमंडीलाल अग्रवाल

30. बिल्ली मछली
– डॉ. परशुराम शुक्ल

42. तितलियों का संसार
– विद्या प्रकाश

48. गोरिल्ला
– डॉ. विनोद गुप्ता

ऐसे करें नव वर्ष का अभिनंदन

प्रिय पाठको एवं साथियो, आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। आप सभी खुश रहें, व्यस्त रहें, सन्तुष्ट रहें एवं स्वस्थ रहें।

हम जीवन में खुश रहने, सन्तुष्ट एवं स्वस्थ रहने के लिए कुछ न कुछ तो करते हैं फिर भी उनको इस तरह की अनुभूति नहीं हो पाती। कुछ हालात का शिकार हो जाते हैं तो कुछ अपनी गलतियों के। किसी–किसी के कार्य का तो मूल्यांकन ही सही ढंग से नहीं होता और अनेकों अपने हक के लिए जूझते रहते हैं, उस समय तो उनका कोई साथ भी नहीं देता लेकिन जब वे अपनी दशा अपने साथियों को बताते हैं तब वे भी किनारा कर जाते हैं। परन्तु जब उनके साथ भी वैसा हो जाता है तो कहते हैं साथी तुम संघर्ष करो हम तुम्हारे साथ हैं।

संघर्ष जब हमने स्वयं ही करना है तो फिर पहले हमें अपने ही संग हर्ष के साथ रहना होगा। ''संग–हर्ष'' ही संघर्ष है। जो लोग कहते हैं तुम संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि उन्होंने अगर पहले ही साथ दिया होता तो संघर्ष की आवश्यकता ही नहीं होती। इस प्रकार यह समझ आ जाता है कि हम किसी से सहायता की अपेक्षा न करें। हो सके तो दूसरों की सहायता कर अपने में व्यस्त रहें यहीं हमें सन्तुष्टि दे सकती है।

एक बार एक अध्यापक किसी बच्चे के जन्मदिन पर उसके घर गए। वहाँ उन्होंने सभी बच्चों को इकट्ठा किया और सभी को एक–एक गुब्बारा दे दिया और कहा कि इस गुब्बारे में हवा भरकर उसके ऊपर अपना–अपना नाम लिख दो। सभी ने ऐसा ही किया। इसके बाद अध्यापक जी ने सभी गुब्बारों को इकट्ठा करके एक खूंटे से दीवार पर बाँध दिया और कहा कि सभी अपने–अपने नाम के गुब्बारे को निकालकर अपने–अपने हाथ में पकड़ लो। इसके लिए उन्होंने पाँच मिनट का समय निश्चित किया। फिर क्या था सभी अपना–अपना गुब्बारा ढूंढने लगे लेकिन यह क्या? समय बीत गया परन्तु कोई भी अपने नाम का गुब्बारा नहीं ढूंढ पाया। इस पर अध्यापक जी ने कहा अब सभी बच्चों ने एक–एक गुब्बारा उठाना है और जिसका भी नाम निकले वह उस बच्चे को दे दें। इस ढंग से जब बच्चों ने गुब्बारा निकाला और जिस किसी का नाम था वह उसने उस नाम लिखे बच्चे को सौंप दिया। इस प्रकार यह कार्य तीन–चार मिनट में ही हो गया।

इस पर अध्यापक जी ने बताया कि अगर हम मिलकर कोई भी कार्य करेंगे, प्रयास करेंगे तो वह कुछ ही समय में हो भी जाएगा और हमारी ऊर्जा, शक्ति, श्रम भी व्यर्थ नहीं होगा।

प्यारे साथियों, हम जब भी किसी को शुभकामनाएँ भेजें तो उसमें लिखे या कहे गए वाक्यों में, शब्दों में अपने हृदय की सच्ची अभिव्यक्ति होनी चाहिए। जो भी करें खुशी से करें। हर्ष एवं उल्लास के साथ करें, उत्साहित होकर करें। हमारे मन में अगर खुशी होगी तभी तो हम दूसरों को भी खुशी दे सकेंगे। ऊपर–ऊपर से किसी भी कार्य को करना हमारे अपने लिए भी नकारात्मक हो जाता है जिसका हमें आभास ही नहीं हो पाता। हो सके तो जितना भी सम्भव हो सके दूसरों की सहायता अवश्य करें, आदर करें, सम्मान करें और तभी हम आनन्द को प्राप्त कर पाएँगे। यही हमारा नव वर्ष के हर दिन का आचरण होना चाहिए। नव वर्ष में नव आचरण के साथ नये संस्कार जगाएँ और स्वयं में स्थित होकर सभी का अभिनन्दन करें।

– विमलेश आहूजा

अनमोल वचन

- हीरे के गुण ही अपने आपमें उसको कीमती बनाते हैं। भक्त भी कर्म के द्वारा बोलता है। सबसे असरदायक बोल कर्म ही हुआ करता है।
- ज्ञान का सूर्य उदय होने पर प्यार का जन्म होता है और नफरत समाप्त हो जाती है। जबकि अभिमान के कारण भक्ति और सुमति से भी हाथ धोना पड़ता है।
- प्यार और सत्कार का मूल आधार ब्रह्मज्ञान है।

  – बाबा हरदेव सिंह जी
- सन्त का जीवन मक्खन की तरह होता है। यदि किसी को आँच लगती है तो सन्त को भी उसकी आँच लगने से हृदय पिघल जाता है।

  – तुलसीदास
- जितने कम शब्द होंगे प्रार्थना उतनी ही अच्छी होगी। **– मार्टिन लूथर**
- यदि कोई मनुष्य कहता है कि मैं ईश्वर से प्रेम करता हूँ परन्तु वह अपने भाई से घृणा करता है तो वह झूठा है।

  – उमर खैय्याम
- हे परमेश्वर! हमारे मन को शुभ संकल्प वाला बनाओ। हमें सुखदायी बल और कर्म शक्ति प्रदान करो। – ऋग्वेद
- जिसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है, वह मनुष्य सदा पाप ही करता है। केवल पुनः पुनः किया हुआ पुण्य ही बुद्धि को बढ़ाता है।

  – वेदव्यास
- अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सेवा है। **– महात्मा गाँधी**
- जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया। **– शंकराचार्य**
- ईर्ष्या और अहंकार को तोलिये। मिलजुलकर दूसरों की भलाई के लिए काम करना सीखिए।

  – विवेकानन्द
- वह कौन सा कठिन कार्य है जिसे धैर्यवान मनुष्य सम्पन्न नहीं कर सकता।

  – वृहात्कल्प भाष्य
- जिस व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास नहीं उसकी असफलता निश्चित है।
- जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है तो अभिमान भी सिर झुका लेता है।

  – सुदर्शन
- निरन्तर अथक परिश्रम करने वाले भाग्य को भी परास्त कर देंगे। **– तिरुवल्लुर**
- प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असम्भव नजर आता है। **– कारलाइल**
- अक्लमंद आदमी बोलने से पहले सोचता है। बेवकूफ बोल लेता है और तब सोचता है कि वह क्या कह गया? **– रस्किन**
- जो विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखता है तथा सत्य से विचलित नहीं होता, वही ज्ञानी है। **– अज्ञात**

आओ क्यों क्या का कारण जानें ?

- क्या है लोकतंत्र?

❖ लोकतंत्र उस शासन व्यवस्था को कहते हैं जिसमें शासन की शक्तियां अन्तिम रूप से वहाँ के निवासियों या नागरिकों के हाथ में रहती हैं। इसके लिए जनता को अधिक–अधिकार प्रदान किये जाते हैं।

- क्या है गणतंत्र?

❖ गणतंत्र का अभिप्राय उस शासन व्यवस्था से है जिसमें राष्ट्राध्यक्ष अनुवंशिक न होकर निर्वाचित होता है अर्थात् कोई भी नागरिक विधिवत प्रक्रियाओं द्वारा राष्ट्रपति बन सकता है।

- कच्चे पपीते में दूध जैसा तरल पदार्थ क्यों निकलता है?

❖ कच्चे पपीते में दूध जैसा पेपेन उपलब्ध रहता है। जिसे लेटेक्स कहते हैं। यह पेपेन प्रोटीन अणुओं को विखंडित करने में प्रोटीयोलामिटिक क्रियाशीलता के कारण सक्षम है। अतः यह पाचन क्षमता बढ़ाता है।

- शुष्क बर्फ क्या होती है?

❖ शुष्क बर्फ ठोस कार्बनडाईऑक्साइड होती है। शुष्क बर्फ गर्म करने पर सीधे गैस में परिवर्तित हो जाती है।

- खीरा में तीखापन या कड़वाहट किस कारण से होता है?

❖ खीरे में कड़वाहट उसमें स्थित यौगिक तत्वों की उपस्थिति के कारण होती है। जो गंधक व पोटाश का संयोग होता है। इसलिए खाने से पूर्व उसके डंठल की तरफ से काटकर नमक लगाकर रगड़ते हैं। जिससे सफेद लिसलिसा पदार्थ निकलता है।

- दूध कब दही बन जाता है?

❖ दूध के जमने और फटने की क्रियाएँ वास्तव में बैक्टीरिया के कारण होती हैं। ये आकार में इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें हम नंगी आँखों से नहीं देख पाते हैं और ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि एक सुई की नोक पर हजारों की संख्या में जीवाणु हो सकते हैं। दूध में यदि लैक्टोबेसिलस या स्टेफैलोकोकस नामक जीवाणु मिल जाएँ जो दही में मौजूद होते हैं तो वह अपनी संख्या में बढ़ोत्तरी करना आरम्भ कर देते हैं और सारे दूध को दही में बदल देते हैं।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

मैं सीमा पर जाऊँ

– घमण्डीलाल अग्रवाल

इच्छा होती है सैनिक बन,
मैं सीमा पर जाऊँ।

है स्वीकार नहीं भारत पर,
कोई आँख उठाए।
हरे–भरे से इस उपवन में,
विष के वृक्ष उगाए।।

दाँत करूँ दुश्मन के खट्टे,
नानी याद दिलाऊँ।

मैं वंशज राणा प्रताप का,
वीर शिवा का हूँ बेटा।
अपनी बाजू की ताकत से,
हर संकट को है मेटा।।

वीरों की अग्रिम कतार में,
अपना नाम लिखाऊँ।

कोई रोके नहीं मुझे अब,
लेता खून उबाला।
देशवासियों को देना है,
सुख का रोज़ निवाला।।

फर्ज निभाऊँगा अब पूरा,
माँ को नहीं लजाऊँ।

यह जीवन–धन पाया जिससे,
उसे समर्पित करना।
सिंहों के दाँतों को गिनना,
गीदड़–सा क्या मरना।।

प्रथम देश की मर्यादा है,
मैं तो यह दोहराऊँ।

स्वतंत्रता सभी को प्रिय

– बलतेज कोमल

समीर बेहद शरारती बच्चा था। शरारती होने के साथ–साथ उसमें एक खराब आदत यह भी थी कि वह बेकसूर पक्षियों को अकारण ही दुःख देता था। समीर के पापा एक लेखक थे वह पक्षियों से बहुत स्नेह करते थे। उन्होंने पक्षियों के रहन–सहन पर एक पुस्तक भी लिखी थी।

समीर के पापा ने, समीर को कई बार समझाया कि देखो समीर बेटा, ''तुम इन पक्षियों को आकरण ही दुःखी न किया करो। इन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम हाथ धोकर इनके पीछे पड़े रहते हो?''

लेकिन समीर अपने पिता की दी हुई नसीहत पर बिल्कुल अमल न करता। वह अक्सर पक्षियों को फंसाने के नये–नये तरीके सोचता रहता। कई बार वह अपने घर की सभी खिड़कियाँ व दरवाजे बन्द करके चिड़ियों को पकड़ता और उन्हें अपने पिंजरे में बंदी बनाकर उनका तमाशा देखता रहता। वह कभी उनके आगे रोटी का टुकड़ा रखता और कभी उनके आगे पानी की कटोरी रखता। लेकिन कैद हुई चिड़ियाँ न कुछ खातीं और न कुछ पीतीं। वे भूखी और प्यासी ही समीर के पिंजरे में दम तोड़ देतीं। अगले दिन समीर फिर कोई दूसरा पक्षी पकड़ता और उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करता। एक दिन उसने फाख्ता के घोसले से उसके दो मासूम बच्चों को पकड़ लिया। आदत के अनुसार उन्हें पिंजरे में बंद करके वह बहुत प्रसन्न हुआ।

कुछ देर बाद जब फाख्ता अपने बच्चों के लिए भोजन लेकर आई तो अपने दोनों बच्चों को घोसले में न पाकर बहुत घबरा गयी। उसने इधर–उधर बच्चों को ढूंढने के लिए देखा। जल्दी ही उसे अपने बच्चे समीर के पिंजरे में नजर आ गये। वह चिंतित हो उठी और आँखों में आँसू भरकर जोर–जोर से शोर मचाने लगी।

फाख्ता की चीख–चिल्लाहट सुनकर वहाँ बहुत सारे पक्षी, तोते, कबूतर, मैना व कौए आदि आ पहुँचे। सभी ने इकट्ठे होकर बच्चों को बंधन–मुक्त कराने की चेष्टा की। मगर सभी पक्षी बेबस रहे क्योंकि समीर के हाथ में डंडा था। अपने आँगन में इतने पक्षी देखकर वह अपने आपको 'तीस मार खां' समझ रहा था। समीर को भूख ने सताया तो वह भोजन खाने के लिए अन्दर गया। उसने पिंजरा भी उठाकर अन्दर रख दिया था। सारे पक्षी चले गये थे। अब सिर्फ वहाँ बच्चों की माँ ही अकेली थी। वह लगातार रो रही थी। शायद उसे अब भी आशा थी कि वह लड़का उसके बच्चों को आजाद कर देगा।

समीर के भोजन करते–करते उसका प्रिय मित्र व सहपाठी अमितोज, समीर के पास आया। दो मासूम पक्षियों को पिंजरे में बन्द देखकर वह बहुत

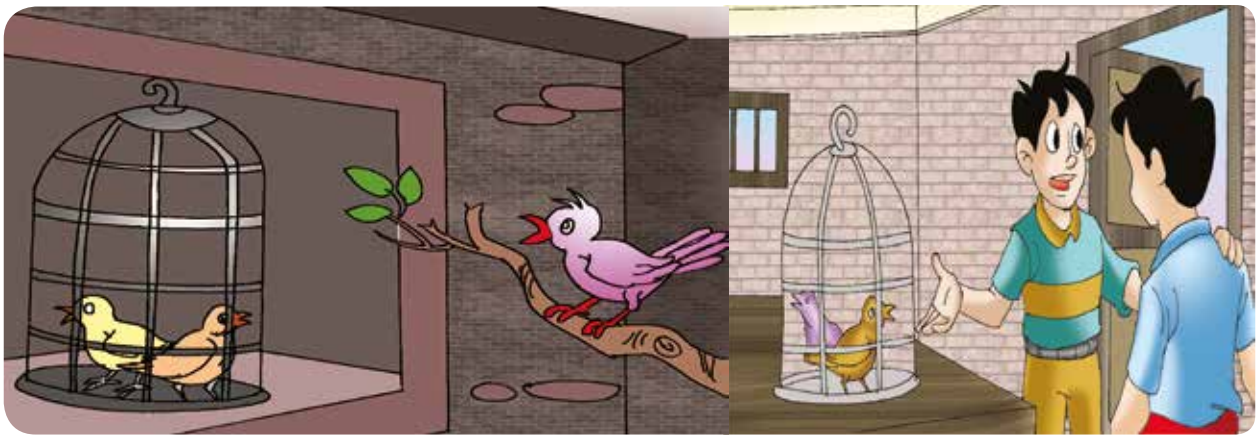

दुःखी हुआ। समीर की ऐसी घटिया हरकत पर अमितोज को बड़ी पीड़ा हुई। उसने समीर से कहा– ''तुम बहुत जालिम व अत्याचारी हो। इन पक्षियों ने तेरा क्या बिगाड़ा है जो इनको बन्दी बनाकर रखा है?''

''मैं अत्याचारी कब हूँ? मैं तो इन्हें दाना–पानी भी देता हूँ। अगर यह कुछ खाते–पीते नहीं तो इसमें मेरा क्या दोष है? तुम्हें मुझ पर एतबार नहीं तो खुद देख सकते हो।'' इतना कहकर समीर पिंजरा लेकर बाहर आ गया।

अमितोज, समीर की मूर्खता भाप चुका था। उसने सोचा– अगर समीर को गुस्से से समझाया तो शायद वह ना माने। चलो इसे प्यार से ही समझाकर देखते हैं।

उसने समीर से बड़े प्यार से कहा– ''देखो समीर! जिस तरह इन बच्चों की माँ, अपने बच्चों की जुदाई में व्याकुल हो रही है, ईश्वर न करे, कल तुम्हें भी अपनी माँ से दूर कोई ले जाये तो तुम्हारी माँ पर क्या बीतेगी? क्या अपनी माँ के बिना तुम खाना खा सकोगे? वह भी जालिम व अत्याचारी लोगों की कैद में।''

–देखो मित्र, हर पक्षी आज़ाद रहना चाहता है। जिस तरह हम आज़ाद हैं। अगर तुम्हें पक्षियों से खेलने का ही शौक़ है तो तुम छत पर इनके लिए दाना और किसी मिट्टी के बर्तन में पानी रख सकते हो। फिर देखना, पक्षियों की आमद से तुम्हारा घर–आँगन कितना सुन्दर हो जायेगा। अमितोज की इन बातों का समीर के दिल पर गहरा असर हुआ।

उसे मानना पड़ा कि वह जरूर परिन्दों पर जुल्म ढाता रहा है। उसने फिर उसी क्षण फाख्ता के दोनों बच्चों को आजाद कर दिया। वे आज़ाद होकर अपनी जननी के पास पहुँच गये थे।

समीर ने अपना पिंजरा भी तोड़कर फेंक दिया था। ❖

सबसे अच्छा

– डॉ. श्याम मनोहर

प्राचीनकाल की बात है। अवंतिका नगरी के राजा भोज बड़े न्यायी और बुद्धिमान नरेश थे। उनके राज्य में सभी सुखी थे। कोई निर्धन नहीं था। उनके दरबार में अनेक गुणी और विद्वान थे। राजा भोज विद्वानों का बहुत आदर करते थे। वे हर वर्ष नये–नये गुणी लोगों को अपने दरबार में भर्ती करते थे।

एक बार किसी दूरदेश से भटकता हुआ एक विद्वान उनकी राजधानी में आ पहुँचा। वह निर्धन था। परन्तु पढ़ा–लिखा था। उसने सुना कि राजा भोज गुणियों का आदर करते हैं। इसलिए वह अपना भाग्य आजमाने भोज के दरबार में आ पहुँचा था।

उस समय राजा भोज अपने मंत्रियों के साथ सलाह–मशविरा कर रहे थे। राज्य कर्मचारियों ने विद्वान को राजा भोज के पास पहुँचा दिया। राजा ने विद्वान का आदर–सत्कार किया और आने का प्रयोजन पूछा।

विद्वान ने कहा– राजन्! मैं कौशल देश से आया हूँ। मेरा नाम अमरनाथ है। काशी में मैंने विद्या ग्रहण की है। सुना है आप गुणियों का आदर करते हैं। इसलिए आपके पास आया हूँ।

राजा भोज ने कहा– महाराज! पहले मैं आप से चार प्रश्न पूछूँगा। सही उत्तर मिलने पर आपको दरबार में रख लिया जाएगा।

राजा भोज ने पहला प्रश्न किया– दूध किसका अच्छा होता है?

विद्वान ने उत्तर दिया– दूध माँ का अच्छा होता है। जो हमें प्राणदान देता है।

राजा भोज ने दूसरा प्रश्न किया– पत्ता किसका अच्छा होता है?

विद्वान ने थोड़ा विचार कर कहा– पत्ता पान का अच्छा होता है। जिसे राजा, रईस, गरीब सब खाते हैं व एक–सा लाल रंग सबको उससे मिलता है।

राजा भोज ने तीसरा प्रश्न किया– फूल किसका अच्छा होता है?

विद्वान ने सोचकर कहा– महाराज! फूल कपास का अच्छा होता है जो हमें कपड़ा देता है, जिससे हम अपना शरीर ढकते हैं।

राजा ने अंतिम प्रश्न किया– मिठास किसकी अच्छी होती है?

विद्वान ने उत्तर दिया– महाराज! मिठास वाणी की सबसे अच्छी होती है जो हर एक को अपने वश में रखने की ताकत रखती है। मीठी वाणी का असर तुरन्त होता है।

राजा भोज प्रश्नों के तर्क–युक्त सही उत्तर सुनकर बड़े प्रसन्न हुए तथा खुश होकर उन्होंने विद्वान को काफी धन दिया और दरबार में रख लिया।

–जिस राज्य या समाज में विद्वानों का सम्मान होता है वही सम्पन्न व ऐतिहासिक हो जाता है। ❖

आया है नववर्ष

– डॉ. बच्चन पाठक

आया है नववर्ष साथियों,
आया है नववर्ष।

उन्नति हो, भारत की हम सब,
उठो पढ़ें सहर्ष।
हम भारत के सैनिक,
आगे बढ़ते जायेंगे।।

हिमगिरी की दुर्गम चोटी पर,
सदा तिरंगा फहरायेंगे।
साहस के हर काम करेंगे,
पूरे जग में नाम करेंगे।।

पहले तत्पर कर्तव्य पथ पर,
फिर पीछे आराम करेंगे।
बेकारी, भूखमरी मिटे,
हम ऐसा उद्योग करेंगे।।

सारे भारतवासी अपने,
हम सबसे सहयोग करेंगे।
नया साल कहता है हमसे,
कभी नहीं घबराना।।

अन्यायी हो लाख बली,
पर कभी न शीश झुकाना।
होवे भारत का उत्कर्ष,
स्वगत है तेरा नववर्ष।।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

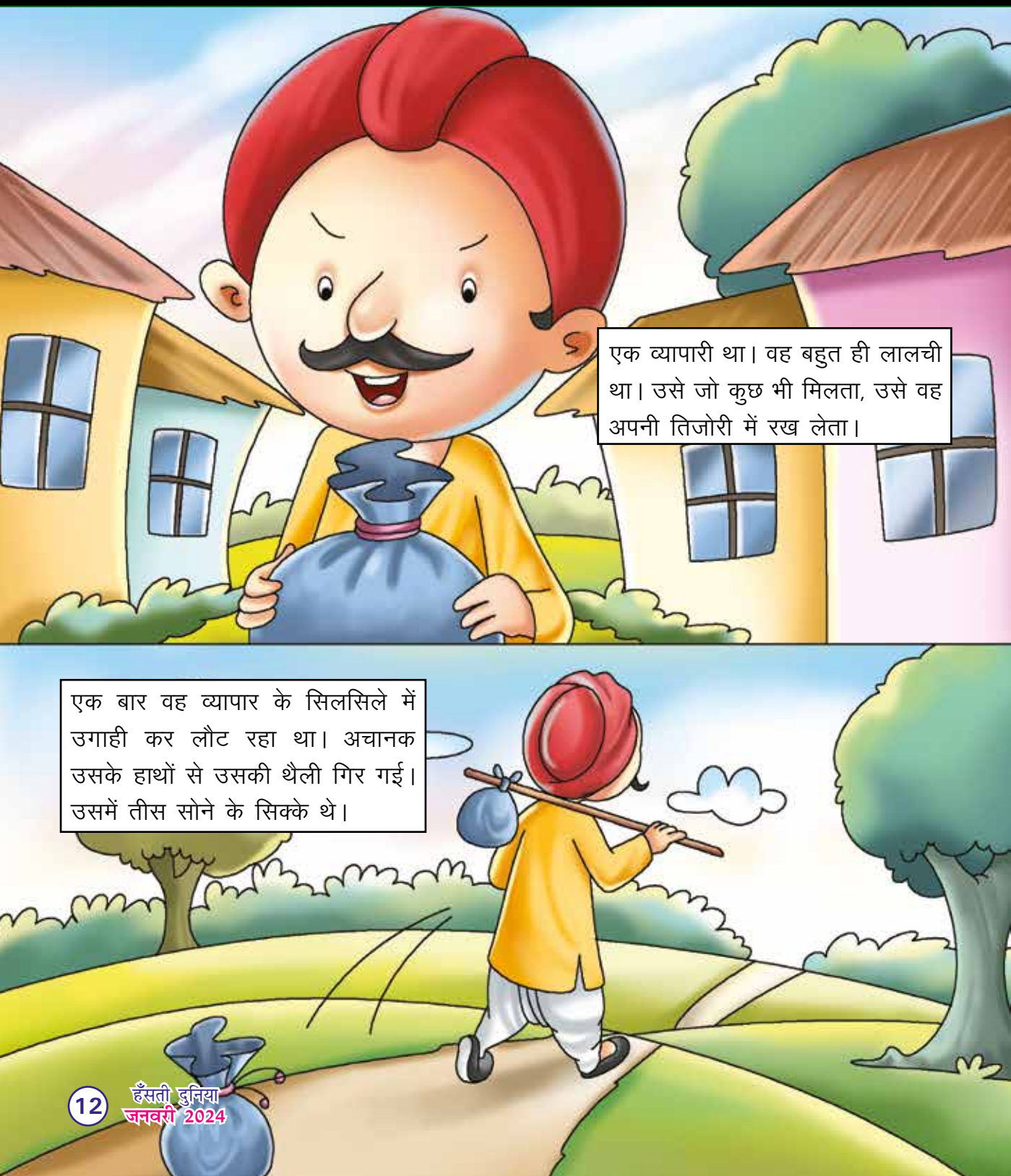

वह थैली अचानक ही मुखिया की बेटी को मिल गई।
वह गाँव के मुखिया के घर गया और उसे थैली खोने के बारे में बताया। मुखिया ईमानदार व दयालु था।
मुखिया ने थैली खोलकर सिक्के गिने तो उसमें तीस सिक्के थे।
मुखिया ने वह थैली व्यापारी को सौंप दी। व्यापारी ने थैली खोली और सिक्के गिनने लगा।

व्यापारी के मन में लालच आ गया था इसलिए उसने दस सिक्के गायब होने की बात कही।
मुखिया ने उसे बहुत समझाया पर वह थैली को वहीं छोड़कर सीधा अदालत चला गया।
उसने सारी बात जज को बताई। जज ने मुखिया और उसकी बेटी को बुलाया और पूछा– थैली में कितने सिक्के थे।
तुमने कितने सिक्के खोए?
चालीस।
तीस।

तो इसका मतलब यह है कि यह थैली तुम्हारी नहीं है। ये थैली इसी लड़की के पास रहेगी जब तक इसका असली मालिक न मिल जाए।
और अगर कोई चालीस सिक्कों की थैली आएगी तो मैं तुम्हें बुलवा लूँगा।
अब व्यापारी को अपने झूठ पर पछतावा होने लगा और वह चिल्ला उठा– नहीं, नहीं मेरे तो तीस सिक्के ही खोए थे।
पर जज ने उसकी एक न सुनी और अदालत से बाहर निकाल दिया।
सच ही कहा है– 'लालच का अन्त बुरा ही होता है।'

गज़ब की है गाजर

– कैलाश जैन

गाजर सर्दियों में बहुतायत से आने वाला फल है। यह सर्व सुलभ और ग़ज़ब की पौष्टिक चीज है। यह जमीन के भीतर उगने वाली फसल है और इसका कद मूली के समान होता है। गाजर काले, लाल व भूरे रंग की होती है। संस्कृत में इसे गर्जर, गृंजन और पिंड मूल कहा जाता है।

गाजर की आयुर्वेद में भी काफी प्रशंसा की गई है। आयुर्वेद के अनुसार, गाजर मधुर, तिक्त एवं रस–युक्त, उष्ण, अर्श, संग्रहणी, कफ तथा वात को नष्ट करने वाली होती है। इसमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, लौह तत्व, विटामिन 'ए' और 'डी', खनिज लवण, कैल्शियम आदि तत्व पाये जाते हैं। खासतौर पर विटामिन 'ए' की भरपूर उपस्थिति गाजर को नेत्र–रोगों के वास्ते रामबाण औषधि बनाती है।

रासायनिक संरचना के मुताबिक प्रति सौ ग्राम गाजर में निम्नांकित तत्व पाये जाते हैं– जल 86 ग्राम, प्रोटीन 0.9 ग्राम, वसा 0.10 ग्राम, खनिज लवण 1.10 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट 10.7 ग्राम, कैल्शियम 0.08 ग्राम तथा फास्फोरस 0.03 ग्राम। इसके अलावा, प्रति सौ ग्राम गाजर से शरीर को 48 कैलोरी ऊर्जा मिलती है।

विटामिन 'ए' की प्रचुरता गाजार में गाय, भैंस व बकरी के दूध से भी अधिक होती है। गाजर के सेवन से आँखों की रोशनी बढ़ती है। नियमित रूप से गाजर खाने वाले को कभी भी रतौंधी रोग नहीं होता।

रक्त कणों में वृद्धि, रक्त–शुद्धि तथा शरीर की रोग–प्रतिरोधक शक्ति को बनाए रखने में लौह–तत्व का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। यह हमें गाजर से पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। गाजर में आयरन व फास्फोरस के अलावा प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट आदि तत्व भी पाये जाते हैं, जो शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं। फास्फोरस और कैल्शियम शरीर की अस्थियों और दाँतों को मजबूती प्रदान करते हैं। सेब फल की अपेक्षा गाजर में कैल्शियम, आयरन, थाइमिन राइबोफ्लेविन, नायसिन और केरोटिन नामक तत्व अधिक मात्रा में पाये जाते हैं जो स्वास्थ्यवर्द्धक होने के साथ–साथ गाजर को सेब फल से अधिक उपयोगी बनाते हैं। सेब में गाजर के मुकाबले ऊर्जा (कैलारी) और फास्फोरस ही अधिक होता है।

खनिज पदार्थों की दृष्टि से भी गाजर का कोई सानी नहीं, इसमें खास खनिज पोटेशियम होने के साथ–साथ सोडियम, केल्शियम, मैग्नीशियम, क्लोरीन आदि भी उपलब्ध होते हैं। अतः खनिजों के अभाव वाले व्यक्तियों के लिए गाजर एक आदर्श टानिक है जो आँतों की सड़न व गंदगी को दूर करता है।

गाजर में संतुलित आहार के समस्त गुण मौजूद हैं। यह अनिद्रा और थकान से मुक्ति दिलाती है। इसके अतिरिक्त गाजर का सेवन बच्चों को दूध पिलाने वाली माताओं के लिए दुग्धवर्धक होता है। गाजर के रस का सेवन पेट के कीड़ों को नष्ट करता है। नाक, कान व गले के रोगों में भी गाजर का उपयोग लाभदायी है। कब्ज, खून की खराबी, अपच और बच्चों की सामान्य कमजोरी आदि में भी गाजर का सेवन उपयोगी साबित होता है।

आयुर्वेद के अनुसार, गाजर शरीर के दूषित रक्त को साफ करती है। यह शरीर की अनावश्यक गर्मी को शान्त करती है। कच्ची गाजर का रस रोग–निवारक, तृप्तिदायक, पौष्टिक और स्वादिष्ट पेय है।

गाजर को कच्चा खाना अधिक लाभदायक है क्योंकि पकाने से उसके अनेक पौष्टिक तत्व नष्ट हो

जाते हैं। जहाँ तक मुमकिन हो सके, गाजर को सुबह के समय खाइए और दाँतों से अच्छी तरह से चबाकर खाइए। गाजर को चबाकर खाने से दाँतों का भी अच्छा व्यायाम हो जाता है और वे मजबूत होते हैं।

गाजर पीलिया की प्राकृतिक औषधि है। यूरोप में पीलिया के रोगियों को गाजर का रस, गाजर का सूप अथवा गाजर का गर्म काढ़ा देने का रिवाज है। गाजर का रस सन्धिवात (गठिया) को ठीक करता है। गाजर की गर्म पुल्टिस बाँध देने से फोड़े–फुंसियों में लाभ होता है। यह फोड़े–फुंसियों के जमे हुए रक्त को पिघला देती है।

100 ग्राम गाजर का रस प्रतिदिन पीने से मसूढ़े और दाँतों में रोग पैदा नहीं होते व दाँतों की जड़ें मजबूत होती हैं। कच्ची गाजर को पीसकर आग से जले हुए स्थान पर लगाने से जलन कम होती है व फफोले भी नहीं पड़ते।

गाजर के चिकित्सकीय उपयोगों के अलावा इसके व्यंजन भी खाने में स्वादिष्ट व पौष्टिक होते हैं। गाजर के सूप, सलाद, हलवा, खीर, मुरब्बा, बर्फी आदि व्यंजन बनाए जाते हैं, जिन्हें लोग चाव से खाते हैं। कुल मिलाकर यह एक स्वादिष्ट, रूचिकर व स्वास्थ्यवर्धक फल है। ❖

वृक्ष कैसे सहते हैं ठंड

–विद्या प्रकाश

उत्तरी गोलार्द्ध की हाड़कंपा देने वाली तेज ठंडक में पेड़–पौधों को पानी की कमी का सामना उसी प्रकार करना पड़ता है जिस प्रकार गर्म इलाकों के पेड़–पौधो को गर्मी के मौसम में। इसकी वजह यह है कि सर्दियों में बर्फ के कारण इन इलाकों की मिट्टी जमकर इतनी कड़ी हो जाया करती है कि पेड़–पौधे उसमें से तनिक भी पानी नहीं खींच पाते। इस स्थिति में उन्हें अपने पत्तों में मौजूद रस से ही अपना पोषण और गुजारा करना पड़ता है।

इसका सबसे अच्छा उदाहरण है चीड़ के सुईनुमा पत्ते। अगर इन पत्तों में मौजूद पानी जमकर बर्फ बन जाये तो पत्ते टूटकर झड़ जायेंगे। मगर पत्तों में रस अत्यल्प मात्रा में होता है यानी उनमें जमने के लिए अधिक पानी होता ही नहीं। यह पानी भांप बनकर नहीं उड़ता क्योंकि पत्तियों के छेद बहुत गहरे खाँचों में स्थित होते हैं।

फॉग और स्मॉग

– आसिफ अंसारी

❖ **आइए पहले जानते हैं कि फॉग क्या होता है?**

❖ फॉग यानी कोहरा, एक्चुअल में हवा में तैरता पानी या फिर बर्फ की बहुत महीन बूँदें होती हैं। जब हवा में मौजूद पानी वाष्प बनकर ठंडा होकर हवा में ही जम जाता है, उसे फॉग बोलते हैं। कोहरा धरती के बिल्कुल करीब आ चुके बादल होते हैं। यह एक सफेद चादर की तरह पूरी हवा को ढक देते हैं।

❖ **आप जानते हैं स्मॉग क्या होता है?**

❖ स्मॉग, फॉग, स्मोक यानी कोहरे और धुँए का सम्मिश्रण (कॉम्बिनेशन) होता है। यह एक पीला या काला कोहरा होता है जो वायु प्रदूषण की वजह से बना है। स्मॉग में खतरनाक और जानलेवा गैस जैसे– सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, बेंजीन और अन्य कार्बनिक गैस भारी मात्रा में पाई जाती हैं।

❖ **क्या अंतर है फॉग और स्मॉग में?**

❖ फॉग और स्मॉग में सबसे बड़ा अंतर स्मोक यानी धुँए का होता है। स्मॉग की स्थिति में हवा में धुँआ होता है जिसकी वजह से धुंधलापन आता है। स्मॉग आपकी सेहत के लिए काफी खतरनाक होता है। वैसे विजिबिलिटी फॉग में भी कम होती है लेकिन ये धुँए की वजह से नहीं बल्कि वाटर वेपर की वजह से होती है जोकि ठंडी होकर हवा में जम जाती है। इससे हवा में एक सफेद चादर–सी दिखाई देती है।

फॉग और स्मॉग में अंतर देखकर भी बता सकते हैं। स्मॉग की स्थिति में हवा में हल्का कालापन होता है यानि स्मॉग ग्रे कलर का होता है। लेकिन जब सिर्फ कोहरा रहता है तो हवा में 'ग्रे कलर' की नहीं 'वाइट कलर' दिखाई देता है। फॉग के लिए कहा जाता है कि यह ज्यादा ऊँचाई तक नहीं होता है जबकि स्मॉग हवा में तैरता रहता है और गैस चेम्बर का काम करता है। स्मॉग की स्थिति में आपको साँस लेने में मुश्किल होती है और कुछ देर में ही गले में खराश, आँखों में जलन जैसी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। कोहरे की स्थिति में ऐसा नहीं होता है, बस आपको सर्दी ज्यादा लगती है। ❖

तीन बातें

उन्नीसवीं शताब्दी की बात है। बंगाल के मेदिनीपुर जिले के वीर सिंह नामक गाँव में एक बालक अपनी माँ के साथ रहता था। एक दिन बालक ने माँ से कहा– माँ मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ गहने बनवाऊँ।

यह सुनकर माँ बोली– हाँ बेटा, बहुत दिनों से मुझे तीन गहनों की चाह है।

–कौन से तीन गहने?– बालक ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

–बेटा! एक, इस गाँव में स्कूल नहीं है इसलिए एक अच्छे स्कूल की स्थापना।

दो, दवा के लिए दवाखाना और

तीन, गरीब व अनाथ बच्चों के लिए कुछ खाद्य–सामग्री का वितरण। बस यही मेरे तीन गहने हैं।– माँ ने कहा।

माँ की बात सुनकर बालक की आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे। उसने माँ के लिए तीन गहने बनवा दिए। बंगाल में आज भी 'भगवती विद्यालय' इसका साक्षी है। ऐसी माँ थी भगवती और उनका पुत्र का नाम पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर था।

गणतंत्र के गीत गाएँ

– राजकुमार जैन 'राजन'

सबके अधिकारों का रक्षक,
अपना ये गणतंत्र पर्व है।
लोकतंत्र ही मंत्र हमारा,
हम सबको इस पर ही गर्व है।।

काँटों में भी फूल खिलाएँ,
इस धरती को स्वर्ग बनाएँ।
आओ, सबको गले लगायें,
हम गणतंत्र का पर्व मनायें।।

नीले नभ में फर फर फहरे,
विश्व–विजयी तिरंगा प्यारा।
देश शान्ति का बने चमन ये,
चहुँ दिशा फैले उजियारा।।

खुशी मनाएँ सब मिलकर,
गणतंत्र के गीत सुनाएँ।
देश की ताकत और बढ़ाने,
भेदभाव सब भूलते जाएँ।।

रूठ गई किताब

दर्शन सिंह 'आश्ट'

मम्मी ने गुरबीर से कहा, 'बेटा, तुम्हारी परीक्षा नजदीक आ रही है लेकिन तुम्हें कोई परवाह ही नहीं है। जब देखो या तो खेलने के लिए बाहर निकल जाते हो और या कार्टून देखते रहते हो।'

गुरबीर टी.वी.पर कार्टून देखने में व्यस्त था। उसने मम्मी की बात का कोई जवाब न दिया।

मम्मी ने फिर पूछा, 'कुछ बोल रही हूँ गुरबीर, आपको सुनाई दे रहा है न?'

इस बार थोड़ा झुंझलाकर गुरबीर बोला, 'हाँ, हाँ। मम्मी सुन लिया। तुम चिन्ता मत करो। देखना आपको अच्छे अंक लेकर दिखाऊँगा।'

मम्मी ने पूछा, 'ऐसा कौन सा जादुई चिराग है तुम्हारे पास? मुझे भी तो कुछ पता चले, जो तुम्हें बिना पढ़े अच्छे अंक दिला देगा?'

'बस मम्मी। इसके बारे में मेरा परिणाम ही बतायेगा। मुझे खेलने दो, तंग मत करो प्लीज।'

गुरबीर की यह बात सुनकर उसकी मम्मी पहले तो चुप कर गई लेकिन फिर बोली, 'एक बात याद रखना। पढ़ने से ही सफलता हाथ लगती है। मैंने तो कोई बच्चा आज तक ऐसा नहीं देखा, जो बिना पढ़े पास हो जाये।'

'लेकिन मम्मी, मुझे देखना।' यह कहकर गुरबीर ने टी.वी. बन्द कर दिया और मम्मी के सवालों से परेशान सा होकर बाहर अपने किसी दोस्त के घर की ओर रवाना हो गया।

ज्यों–ज्यों परीक्षा पास आ रही थी, त्यों–त्यों गुरबीर के मन का डर बढ़ता ही जा रहा था। मम्मी को तो वह अक्सर ही यही बात कहता रहता था कि वह अच्छे अंक लेकर दिखायेगा। 'यदि वह असफल हो गया तो मम्मी–पापा को क्या मुँह दिखायेगा?' उसे लगा, जैसे उसकी डींगें उसका ही मुँह चिढ़ाने लगी हों।

गुरबीर के सभी मित्र परीक्षा की तैयारी में जुटे थे। वह किसी भी दोस्त के घर जाता, वह पढ़ाई में मशगूल दिखाई देता।

परीक्षा में जब गिनती के दिन बाकी रह गये तो एक दिन अचानक ही उसके दरवाजे की घंटी बजी। कपड़े प्रेस करती उसकी मम्मी ने दरवाजा खोला, देखा, गुरबीर का दोस्त गुलजार था। वह उससे अपनी विज्ञान की कापी लेने आया था जो उसने उससे कल स्कूल में माँगी थी और शाम को वापिस लौटाने का वादा किया था।

'अरे गुरबीर, तुमने कल मेरी कापी वापिस नहीं की। तुम तो कह रहे थे कि घंटे बाद वापिस कर दोगे। मैं शाम तक तेरा इन्तजार करता रहा।'

'क्या बताऊँ? मैं तो सोच रहा था कि चलो घंटाभर खेलकर फिर काम कर लूँगा लेकिन पता ही नहीं चला कि कार्टून देखते–देखते कैसे दो घंटे का समय गुजर गया। फिर मुझे नींद आ गईं अब शुरू करूँगा अपना काम।'

यह बात सुनकर गुलजार को मन ही मन उस पर गुस्सा आया लेकिन उसने गुस्सा प्रकट न होने दिया और बोला, 'मैंने भी काम करना है। इसलिए मुझे कापी दे दो।'

गुरबीर ने उसकी कापी वापिस कर दी। अगले दिन जब वह गुलजार से कापी लेने के लिए उसके घर पर गया तो गुलजार ने उसे टके–सा जवाब दिया, 'गुरबीर, वास्तव में तुम्हें परीक्षा की कोई परवाह नहीं है। अगर तुम्हें चिन्ता होती तो तुम मेरी कापी से काम कर सकते थे लेकिन आप तो परीक्षा के दिनों में भी कार्टूनों में ही मशगूल रहते हो और वो भी परीक्षा के दिनों में। माफ करना, गुरबीर। अब मैं तुम्हें अपनी कापी नहीं दे पाऊँगा क्योंकि मैंने भी तो तैयारी करनी है।'

'कोई बात नहीं, मैं उसे बताऊँगा कि परीक्षा में कैसे उससे भी अच्छे अंक लाता हूँ।' लौटता हुआ गुरबीर सोच रहा था।

परीक्षा का दिन आ गया। सुबह होते ही गुरबीर ने अपने बैग से किताब निकाली। मम्मी–पापा से आँख बचाकर उसने निबंध वाला पृष्ठ थोड़ा सा ही फाड़ा था कि उसे लगा जैसे किसी की चीख निकली हो। उसने आसपास देखा कोई नहीं था।

'मैं किताब बोल रही हूँ।'

'क्या? तुम बोल रही हो यानि मेरी किताब।'

'हाँ, हाँ। मैं तो आपकी मित्र हूँ। मैंने तो आपकी जिन्दगी को संवारना है लेकिन आप मुझे ही फाड़ रहे हो।'

'मैं परीक्षा में तुम्हारी पर्चियाँ बनाकर ले जाऊँगा। नकल टेपूँगा और अच्छे अंक पाऊँगा।'

'आप बड़ी गलती कर रहे हो।'

'मुझे तुम्हारी परवाह नहीं। मैं तुम्हारी पर्चियाँ बनाकर ही ले जाऊँगा।'

'मेहनत करके पास होने से जो खुशी मिलती है, उसका अपना आनन्द होता है। ऐसा करोगे तो याद रखना, परीक्षा में धोखे से पास तो हो सकते हो लेकिन जिन्दगी में नकल के बल पर पास होने वाले असफल ही रहते हैं। मैं तुझसे नाराज हूँ।'

'तुम्हारे नाराज होने की मुझे कोई परवाह नहीं।' यह कहकर गुरबीर ने एक–एक करके बीस पृष्ठ फाड़कर अपनी अलग–अलग जेबों और जुराबों में छिपा लिये।

गुरबीर खुश नजर आ रहा था, सोच रहा था 'खूब नकल करूँगा। अच्छे अंक आयेंगे वो भी बिना पढ़े। मम्मी–पापा और गुलजार देखते ही रह जायेंगे।'

अभी परीक्षा पाँच मिनट पहले ही आरम्भ हुई थी कि आँख बचाकर गुरबीर ने एक पर्ची निकाली और सवाल हल करने का प्रयत्न करने लगा। उसकी तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान उसकी सभी पर्चियाँ पकड़ी गईं। सजा के तौर पर उसे ड्यूटी देने वाले अध्यापक जी ने अपनी कुर्सी के पास ही बिठाकर रखा। गुरबीर हल क्या करता? शर्मिंदा हुआ प्रश्न–पत्र के प्रश्न ही उत्तर कापी पर धीरे–धीरे लिखता रहा।

लेकिन जब उसकी परीक्षा समाप्त हुई तो वह रोता हुआ घर को आ रहा था।

उसकी शक्ल से मम्मी ने अंदाजा लगा लिया था कि उसका पेपर ठीक नहीं हुआ था।

वह अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट गया।

अगले दो दिन छुट्टियाँ थीं। चिन्ता में गुरबीर सोच रहा था, 'किताब सचमुच ही ठीक बोल रही

थी, मेहनत करके पास होने से जो खुशी मिलती है, उसका अपना आनन्द होता है। गलती मेरी ही थी। मेरा ध्यान कार्टून देखने में ही लगा रहा और या फिर खेलने–कूदने में। इसकी सजा भी तो मुझे मिलनी चाहिए।'

परिणाम निकला। गुरबीर इस बार परीक्षा में फेल हो गया।

मम्मी–पापा को भी एहसास होने लगा कि गुरबीर को अपने किये पर पछतावा है। पापा ने उसके आग्रह करने पर उसे स्कूल में दोबारा दाखिल करवा दिया। बाजार से जाकर वह कुछ नईं किताबें ले आया था। पुरानी को उसने अच्छी तरह संवारकर जिल्दें चढ़ा लीं।

पहले दिन गुरबीर कंधे पर बैग लटकाकर स्कूल जा रहा था। सोच रहा था, 'इस बार अच्छे अंक लेकर दिखाऊँगा लेकिन नकल के सहारे नहीं, मेहनत के सहारे।'

'शाबाश! हमने तुम्हारे दृढ़ निश्चय की बात सुन ली है। हम मेहनती बच्चों की कद्र करती हैं। हम तुम्हारे साथ हैं।' गुरबीर ने देखा, उसके बैग की किताबें बोल रही थीं।

अब गुरबीर के कदमों में अनोखी शक्ति थी और मन में ताजगी।

इस बार जब गुरबीर परीक्षाफल का पता करने के लिए स्कूल गया तो अच्छे अंक पाने की सूचना से बहुत खुश हुआ। वह तेज कदमों से घर की ओर आ रहा था तो किताबों की कही बात उसके मन में एकदम ताजा हो गई, 'मेहनत करके पास होने से जो खुशी मिलती है, उसका अपना आनन्द होता है।'❖

महान आविष्कारक
जगदीश चन्द्र बोस

– हरजीत निषाद

जगदीश चन्द्र बोस भारत के अत्यन्त सम्मानित वैज्ञानिक थे। उनका जन्म 30 नवम्बर 1858 को मैमन सिंह, पूर्वी बंगाल (अविभाजित भारत) में हुआ था। वर्तमान में मैमन सिंह बांग्लादेश का मशहूर शहर है। उन्होंने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए भौतिकी, जीव भौतिकी, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, पुरातत्व के अतिरिक्त बांग्ला साहित्य और बांग्ला विज्ञान कथाओं के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मिलीमीटर तरंगें, रेडियो और क्रेस्कोग्राम सम्बन्धित खोजों के कारण वे अत्यधिक प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय, क्राइस्ट महाविद्यालय, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय तथा लंदन विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की।

जगदीश चन्द्र बोस के पिता भगवान चन्द्र बोस ब्रह्म समाज के नेता थे जो फरीदपुर, बर्धमान एवं अन्य जगहों पर मैजिस्ट्रेट और सहायक कमिश्नर रहे। ग्यारह वर्ष की आयु तक बोस ने अपने गाँव के ही एक बांग्ला विद्यालय में शिक्षा ग्रहण की। उनके पिता मानते थे कि व्यक्ति को अंग्रेजी सीखने से पहले अपनी मातृभाषा विधिवत आनी चाहिए। उस समय बच्चों को अंग्रेजी विद्यालयों में भेजना हैसियत की निशानी माना जाता था। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात', अर्थात् प्रतिभाशाली बच्चों का बचपन ही यह उजागर कर देता है कि भविष्य के लिए उनमें कितनी सम्भावनाएं छिपी हुई हैं। बांग्ला भाषी इस विद्यालय में उनके दाएँ–बाएँ पढ़ाई और खेल के बाल मित्रों के साथ वे पक्षियों, जानवरों और जलजीवों की कहानियों को कान लगाकर सुनते रहते थे। शायद उन्हीं कहानियों ने उनके मस्तिष्क में प्रकृति की संरचना पर अनुसंधान करने की गहरी रुचि जगाई।

बाद में वे कोलकाता आ गये और उन्होंने सेंट जेवियर स्कूल में प्रवेश लिया। जगदीश चन्द्र बोस की जीव विज्ञान में गहरी रुचि थी। 22 वर्ष की आयु में चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई करने के लिए वे लंदन चले गए। स्वास्थ्य खराब रहने की वजह से उन्होंने चिकित्सक बनने का विचार त्याग दिया और कैम्ब्रिज के क्राइस्ट महाविद्यालय चले गये। वहाँ भौतिकी के विख्यात प्रोफेसर फादर लाफोण्ट ने बोस को भौतिक शास्त्र का अध्ययन करने की प्रेरणा दी।

स्वदेश लौटकर बोस भौतिकी के सहायक प्राध्यापक के रूप में प्रेसिडेंसी कॉलेज में पढ़ाने लगे। यहाँ वे 1915 तक रहे। उस समय भारतीय शिक्षकों को अंग्रेज शिक्षकों की तुलना में एक तिहाई वेतन ही दिया जाता था। बोस को यह भेदभाव अनुचित लगा और उन्होंने इसका विरोध किया। उनके विरोध का तरीका अनूठा था। वे बिना वेतन के तीन वर्षों तक काम करते रहे, जिसकी वजह से उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई और उन पर काफी कर्जा हो गया। इस कर्ज को चुकाने के लिये उन्हें अपनी पुश्तैनी जमीन भी बेचनी पड़ी। इतना सब होने के बावजूद वे निराश नहीं हुए। बाद में जगदीश चन्द्र बोस की जीत हुई और उन्हें पूरा वेतन दिया गया। बोस एक अच्छे शिक्षक थे, जो कक्षा में पढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक प्रदर्शनों का उपयोग करते थे। बोस के ही कुछ छात्र जैसे सतेन्द्र नाथ बोस आगे चलकर प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री बने।

बोस ने रेडियो की खोज में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बोस के माइक्रोवेव अनुसंधान का पहला उल्लेखनीय पहलू यह था कि उन्होंने तरंग दैर्ध्य को मिलीमीटर स्तर पर लगभग 5 मिमी तरंग दैर्ध्य पर ला दिया। वे प्रकाश के गुणों का अध्ययन के लिए लंबी तरंग दैर्ध्य की प्रकाश तरंगों के नुकसान को समझ चुके थे।

1893 में, निकोला टेस्ला ने पहले सार्वजनिक रेडियो संचार का प्रदर्शन किया। एक साल बाद, कोलकाता में सार्वजनिक प्रदर्शन के दौरान बोस ने एक मिलीमीटर रेंज माइक्रोवेव तरंग का उपयोग, दूरी पर बारूद प्रज्ज्वलित करने और घंटी बजाने में किया। लेफ्टिनेंट गवर्नर सर विलियम मैकेंजी ने कोलकाता टाउन हॉल में बोस का प्रदर्शन देखा। बोस ने एक बंगाली निबंध, 'अदृश्य आलोक' में लिखा था, "अदृश्य प्रकाश आसानी से ईंट की दीवारों, भवनों आदि के भीतर से जा सकता है, इसलिए तार के बिना, प्रकाश के माध्यम से संदेश संचारित हो सकता है।"

बोस की खोजों का अभियान लगातार चलता रहा और उनके डबल अपवर्तक क्रिस्टल द्वारा बिजली की किरणों के ध्रुवीकरण पर पहला वैज्ञानिक लेख, मई 1895 में बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी को भेजा गया था। उनका दूसरा लेख अक्टूबर 1895 में लंदन की रॉयल सोसाइटी को लार्ड रेले द्वारा भेजा गया। दिसंबर 1895 में, लंदन पत्रिका इलेक्ट्रीशियन ने बोस का लेख "एक नए इलेक्ट्रो–पोलेरीस्कोप पर" प्रकाशित किया। उस समय अंग्रेजी बोलने वाली दुनिया में लॉज द्वारा गढ़े गए शब्द 'कोहिरर' का प्रयोग हर्ट्ज के तरंग रिसीवर या डिटेक्टर के लिए किया जाता था। इलेक्ट्रीशियन ने तत्काल बोस के 'कोहिरर' पर टिप्पणी की। 18 जनवरी 1896 की अंग्रेजी पत्रिका इलैक्ट्रीशियन से उद्धृत टिप्पणी है। ''यदि प्रोफेसर बोस अपने कोहिरर को बेहतरीन बनाने में और पेटेंट कराने में सफल होते हैं तो हम

शीघ्र ही एक बंगाली वैज्ञानिक के प्रेसीडेंसी कॉलेज प्रयोगशाला में अकेले शोध के कारण नौ–परिवहन की तट प्रकाश व्यवस्था में नई क्रांति देखेंगे।" बोस ने "अपने कोहिरर" को बेहतर करने की योजना बनाई लेकिन इसके पेटेंट के बारे में कभी नहीं सोचा।

1917 में जगदीश चंद्र बोस के आविष्कारों का सम्मान प्रदान करते हुए "नाइट" की उपाधि प्रदान की गई तथा शीघ्र ही भौतिक व जीव विज्ञान के लिए रॉयल सोसायटी लंदन के फैलो चुन लिए गए। पर्याप्त साधनों तथा धन की कमी के कारण बोस ने अपना पूरा शोधकार्य बिना किसी अच्छे (महंगे) उपकरण और प्रयोगशाला के किया था इसलिए जगदीश चन्द्र बोस एक अच्छी प्रयोगशाला बनाने की सोच रहे थे। "बोस इंस्टीट्यूट" इसी सोच का परिणाम है जो कि विज्ञान में शोध कार्य के लिए हमारे देश का एक प्रसिद्ध केन्द्र है। उनके जीवन से स्पष्ट होता है कि सत्यनिष्ठा और अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित होकर जीवन में सफलताएँ पाई जा सकती हैं। आवश्यकता है तो केवल इतनी कि अध्ययन के प्रति एकाग्रचित्त रहा जाए और आस–पास की छोटी–बड़ी घटनाओं पर पैनी नजर रखी जाए। ❖

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

– घमंडीलाल अग्रवाल

प्रश्न : कार, बस अथवा ट्रक ड्राइवर की सीट के सामने एक समतल दर्पण क्यों लगा रहता है?

उत्तर : जब ड्राइवर सड़क पर वाहन (कार, बस अथवा ट्रक) चलाता है तो उसे पीछे से आते हुए अन्य वाहनों का ज्ञान होना भी अत्यन्त जरूरी होता है ताकि कोई भी दुर्घटना न हो। समतल दर्पण इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए लगाया जाता है। समतल दर्पण में प्रतिबिम्ब उतनी ही दूर पीछे की ओर बनता है जितनी दूरी पर वस्तु उसके सामने होती है। अतः ड्राइवर पीछे आ रही गाड़ियों को देखकर उनकी दूरी का अनुमान लगा सकता है।

प्रश्न : पृथ्वी गतिशील होते हुए भी स्थिर क्यों लगती है?

उत्तर : सौरमंडल में ग्रहों की संख्या नौ है जिनमें एक पृथ्वी भी है। इन ग्रहों का मुखिया सूर्य है तथा सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर गति करते रहते हैं। पृथ्वी के अपनी धुरी पर लगातार घूमते रहने के कारण भी तुम्हें इसके घूमने का अंदाजा भला क्यों नहीं हो पाता? दरअसल, पृथ्वी एक समान गति से घूमती है। किसी वस्तु की गति का अनुमान उसमें होने वाले परिवर्तन से ज्ञात हो सकता है। हाँ, कभी–कभी सूर्य की बदलती हुई स्थिति से पृथ्वी की गति का आभास अवश्य होता है।

प्रश्न : तेज धूप में मिट्टी की अपेक्षा पत्थर अधिक गर्म क्यों हो जाते हैं?

उत्तर : पदार्थ दो प्रकार के होते हैं– सुचालक और कुचालक। सुचालक पदार्थ ऊष्मा और ताप को शीघ्र व अधिक अवशोषित करते हैं जबकि कुचालक पदार्थ ऐसा नहीं कर पाते। पत्थर मिट्टी की अपेक्षा ऊष्मा का सुचालक है। गर्मियों के दिनों में यह मिट्टी की तुलना में अधिक और शीघ्र ऊष्मा अवशोषित करता है। अतः तेज धूप में पत्थर मिट्टी की तुलना में अधिक और शीघ्र ऊष्मा अवशोषित करता है। अतः तेज धूप में पत्थर मिट्टी की अपेक्षा अधिक गर्म हो जाते हैं।

प्रश्न : शैम्पू को नीचे गिराने पर लहर–सी क्यों बन जाती है?

उत्तर : शैम्पू एक अर्ध ठोस पदार्थ है जिसमें अणु आपस में पास–पास रहते हैं। इसमें आण्विक बल भी अधिक होता है। जब शैम्पू को नीचे गिराया जाता है तो एक धारा–सी बन जाती है और यह एक ढेरी का रूप ग्रहण कर लेता है। जब उस पर और अधिक शैम्पू गिराते हैं तो शैम्पू की कई परतें बन जाती हैं जो लम्बे समय तक ढेरी के रूप में रहती हैं। धीरे–धीरे शैम्पू बहने लगता है और लहर सी बन जाती है।

भावना से कर्तव्य ऊँचा

– जगदीश कौशिक

भारतवर्ष के प्रथम गृह तथा उपप्रधानमंत्री थे सरदार बल्लभ भाई पटेल। वह पेशे से वकील थे। एक बार पटेल अपने एक मुकद्दमें में बहस कर रहे थे। मुकद्दमा बहुत संगीन था। थोड़ी–सी असावधानी यदि बहस करने में हो जाती तो वे केस हार सकते थे। इसलिए वह बड़ी सावधानी से दूसरे पक्ष के वकील की दलीलों को काट रहे थे। मुकद्दमे को जीतना वे अपना कर्तव्य समझ रहे थे।

अचानक कोर्ट में ही डाकिया आया और उन्हें तार (टेलीग्राम) का लिफाफा देकर चला गया। पटेल जी ने बहस करते–करते ही तार के शब्दों को पढ़ा और लिफाफा जेब में डाल लिया। बहस समाप्त हो गई। वह बाहर आये तो साथी वकीलों ने तार के बारे में पूछा– तो पटेल जी ने कुछ उदास होकर कहा– मेरी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया है। तार में यही सूचना दी गई है।

उपस्थित सभी वकील हैरान रह गये उनके हौसले को देखकर। कुछ ने कहा– आप अगली पेशी ले लेते? इतना बड़ा हादसा और आप आराम से बहस ऐसे करते रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो।

पटेल जी ने कहा– मित्रों! आप भी ठीक कह रहे हैं। हादसा कोई मामूली नहीं जीवन का साथी हमेशा के लिए साथ छोड़ गया। मुझे तारीख ले लेनी चाहिए थी। परन्तु तनिक सोचो उस बेचारे के केस का क्या बनता जिससे मैंने फीस ले रखी है। हो सकता था बहस अधूरी रहने पर उसे हानि होती।

मरने वाली ने तो अब कभी आना नहीं। मैं भावना में बहकर अपने कर्तव्य से क्यों गिरता? मेरी नजरों में कर्तव्य महान है, भावना तो अस्थायी होती है। मैं जीवन में कर्तव्य को महत्व देता हूँ। भावना को नहीं।

सभी वकील उनकी बात सुनकर हैरान रह गये।

वास्तविकता भी यही है– भावना में बह जाने वाले लोग जीवन की सफलताओं से हाथ धो बैठते हैं। ❖

पढ़ने की लगन

– मदन कोथूनिया

–मम्मी, मैं कल से स्कूल नहीं जाऊँगा। स्कूल से लौटते ही मनु ने सिलाई मशीन चला रही सुजाता से कहा।

–क्यों, क्या हुआ बेटा? टीचर ने डांटा है क्या?– मशीन का पसारा समेटकर सुजाता ने मनु के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा।

–नहीं, मम्मी! टीचर तो कुछ नहीं कहते। पर सारी क्लास के लड़के–लड़कियाँ मुझे चिढ़ाते हैं। मुझे बदसूरत कहते हैं। मेरे पास न अच्छे कपड़े हैं, न जूते–मौजे हैं। सब लड़के–लड़कियाँ अच्छे कपड़े पहनकर आते हैं। 'इंटरवल' में चॉकलेट, बिस्कुट और टाफियाँ मुझे दिखा–दिखाकर खाते हैं। मेरे साथ कोई खेलना नहीं चाहता। मम्मी, अब मैं घर पर ही रहा करूँगा। घर के काम में आपका हाथ बँटा दिया करूँगा।– मनु ने रोते हुए पूरी व्यथा सुजाता को सुना दी।

मनु की बातें सुनकर सुजाता का दिल भर आया। वह कहने लगी– बेटा, हम गरीब जरूर हैं लेकिन किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते। कीमती कपड़ों से कोई सुन्दर नहीं होता, असली सुन्दरता तो अच्छे गुणों और योग्यता से होती है।

थोड़ा रूककर वह फिर कहने लगी– मैं चाहती हूँ बेटा कि तुम खूब मन लगाकर पढ़ो और कक्षा में प्रथम आओ। फिर तुझे सब प्यार करेंगे, तुझे सब सम्मान देंगे। तेरे बिना मेरा है ही कौन? तू स्कूल नहीं जाएगा तो मेरे सारे सपने चकनाचूर हो जायेंगे मनु बेटे।– कहते–कहते सुजाता की आँखों में आँसू छलक आये।

माँ की आँखों में आँसू देख मनु दुःखी होकर बोला– मम्मी, मुझे माफ कर दो, मैं रोज स्कूल जाँऊगा और खूब पढ़ूँगा। तुम्हारा सपना सच होगा मम्मी।

अब मनु रोजाना खुशी–खुशी स्कूल जाने लगा। अपने साथियों के चिढ़ाने और फुसफुसाने का कोई असर उस पर अब नहीं होता था। वह समय पर काम पूरा कर लेता था और किसी न किसी विषय का प्रश्न अपने टीचर से पूछता रहता था। टीचर भी उसकी लगन व परिश्रम को देखकर उसे बताने में रूचि लेने लगे थे। परिणामस्वरूप मासिक परीक्षाओं व टेस्टों में पूरी कक्षा में सबसे ज्यादा अंक मनु ने ही प्राप्त किये।

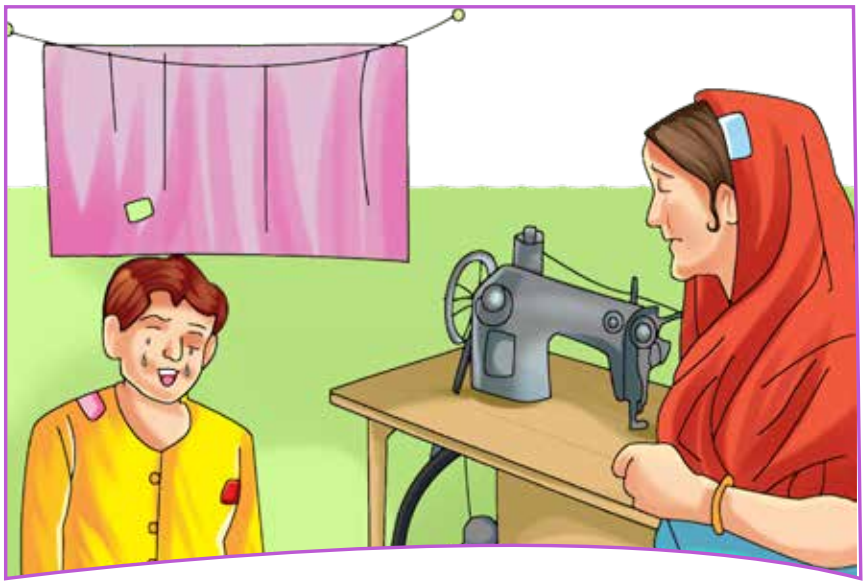

आठवीं की परीक्षा परिणाम घोषित हुआ। मनु ने पूरे जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। समाचार–पत्रों में मनु का फोटो व संक्षिप्त परिचय छपा। जिला विद्यालय निरीक्षक ने प्रथम तीन स्थान प्राप्त छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत करने की घोषणा की थी।

आज मनु के स्कूल में खूब सजावट की जा रही थी। अध्यापक–अध्यापिकाएँ समारोह

की व्यवस्था में लगे हुए थे। स्थानीय छात्र–छात्राओं के अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया था। सभी छात्र–छात्राएँ स्कूल के हाल में पहुँच गये थे। मंच के एक ओर सजी हुई कुर्सियों पर अतिथिगण बैठ चुके थे।

उन्हीं में मनु की मम्मी सुजाता भी चुपचाप बैठी थी।

तभी अचानक हाल में जिला निरीक्षक का प्रवेश हुआ। मुख्य अतिथि की कुर्सी पर बैठते हुए जिला निरीक्षक ने हाथ जोड़कर सबको धन्यवाद दिया। मल्यार्पण और समूहगान के पश्चात् प्रथम आये हुए छात्र–छात्राओं को मंच पर बुलाया गया। उनमें मनु भी था जो अपने स्कूल का गौरवशाली प्रतिनिधित्व कर रहा था। प्रथम स्थान प्राप्त मनु का परिचय मुख्य अतिथि से कराया गया।

मुख्य अतिथि ने कुर्सी से उठकर मनु के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– कितना सुन्दर लड़का है। आगे भी खूब मन लगाकर पढ़ना।

उसके बाद मनु को प्रमाणपत्र और अगली कक्षा की पूरी पुस्तकें पुरस्कार में दी गईं। सभी छात्रों व उपस्थित लोगों ने तालियों से मनु का स्वागत किया। खुशी–खुशी समारोह सम्पन्न हुआ।

पुरस्कार की चीजें माँ को देते हुए मनु की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए। सुजाता ने मनु को बाहों में भरकर चूमते हुए कहा– मेरा सपना कभी चकनाचूर नहीं होगा बेटा ❖

एक रोचक समुद्री जीव
बिल्ली मछली

– डॉ. परशुराम शुक्ल

बिल्ली मछली मुख्य रूप से ताजे पानी की नदियों और झीलों की मछली है। यह उत्तरी गोलार्द्ध के ठंडे स्थानों को छोड़कर सम्पूर्ण विश्व में पाई जाती है। इसके अन्तर्गत 35 परिवारों की दो हजार से अधिक जातियां आती हैं, जिनमें से कुछ नदियों के मुहानों पर और कुछ सागर में भी पायी जाती हैं। यह ऐसे पानी में उन स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करती हैं, जहाँ बहुतायत से जलीय पौधे हों। इसके मुँह पर बिल्ली की तरह तीन जोड़े मूँछे होती हैं। इसलिए इसे बिल्ली मछली कहते हैं। बिल्ली मछली दिन के समय पानी की तलहटी में पड़ी रहती है, अतः दिखाई नहीं देती। रात के समय यह पानी की सतह पर आ जाती है।

यूरोप की बिल्ली मछली को सिल्यूरस, शीटफिश और वेल्स आदि नामों से पुकारते हैं। यह विश्व की सबसे बड़ी बिल्ली मछली है। इसकी लम्बाई 2.75 मीटर होती है। इसके एक जोड़े से अधिक पूँछे होती हैं तथा इन्हें यह अपनी इच्छा से हिला–डुला भी सकती हैं।

अफ्रीका के उष्णकटिबन्धीय भागों में एक अद्‌भुत बिल्ली मछली पायी जाती है। इसे उल्टी बिल्ली मछली कहते हैं। यह सामान्य रूप से तैरते हुए अचानक मुड़ जाती है और उल्टी होकर तैरने लगती है। इसी तरह लियो कैसिस स्पइमेनसिस और लियो कैसिस पीसिलोप्टियस नामक बिल्ली मछलियां तैरती तो सीधी हैं किन्तु ये पानी में खड़े–खड़े आराम करती हैं। अफ्रीका के कुछ भागों में विद्युत पैदा करने वाली ईल मछली के समान विद्युत बिल्ली मछली भी पायी जाती है। यह एक खतरनाक मछली है।

दक्षिण अमरीका की एकेन्थोडोरास स्पाईनोसीसिमस नामक बिल्ली मछली बड़ी सुस्त और आलसी होती है। यह दिन भर पानी की तलहटी में रेत के भीतर दबी पड़ी रहती है। इस समय इसका केवल सिर बाहर रहता है। इस बिल्ली मछली को दिन के समय यदि पानी के बाहर निकाला जाये तो यह सुअर की तरह गुर्राने की आवाज निकालती है।

भारत और बर्मा में टेंगारा और चाकाचामा नामक दो बिल्ली मछलियां पायी जाती हैं। इनमें टेंगारा अत्यन्त सुन्दर मछली है। इसके शरीर का रंग हरा–पीला होता है एवं पीठ कत्थई होती है। दूसरी बिल्ली मछली चाकाचामा की लम्बाई 20 सेंटीमीटर तथा शरीर पर कत्थई रंग के चकत्ते होते हैं। चाकाचामा का शरीर बहुत चपटा तथा सिर बड़ा होता है। इसमें बहुत अच्छा कॉमाफ्लास होता है। चाकाचामा को अपने कॉमाफ्लास पर इतना अधिक विश्वास होता है कि छूने पर यह पत्थर की तरह पड़ी रहती है।

बिल्ली मछली का प्रमुख भोजन छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े, मेढक, क्रस्टेशियन और मछलियां हैं। यह दिन के समय पानी के तल में पड़ी रहती है और अपनी मूँछों से जमीन खोद–खोदकर छोटे–छोटे अरीढ़धारी जीव खाती है तथा रात में शिकार की खोज में निकलती है। यूरोप की वेल्स केट फिश तथा इसी प्रकार की कुछ बड़ी बिल्ली मछलियां

छोटे–छोटे पक्षियों और स्तनधारी जीवों का शिकार करती हैं। वेल्स बिल्ली मछली बड़ी पेटू होती है। यह एक खतरनाक बिल्ली मछली है तथा भेड़ और बकरी के बच्चों के साथ ही मानव के बच्चे तक खा जाती है। सोलहवीं सदी के विख्यात लेखक जेसनर ने एक ऐसी वेल्स मछली का सन्दर्भ दिया है, जिसके पेट में एक वयस्क मानव का सिर और सोने की अंगूठियों सहित हाथ मिला था।

बिल्ली मछली की कुछ जातियों के चूसने वाले मुँह होते हैं। ये प्रायः पहाड़ी क्षेत्रों में बहने वाली नदियों में चट्टानों को पकड़कर लटकी रहती हैं और काई खाती हैं। इस प्रकार की बिल्ली मछलियां एक्वेरियम के लिए बड़ी उपयोगी होती हैं। ये एक्वेरियम की सारी काई साफ कर देती हैं जिससे इसमें गन्दगी एकत्रित नहीं होने पाती।

बिल्ली मछली की एक विशिष्ट जाति पायी जाती है एस्प्रीडीनिकथिस टिबिकेन। इसकी पूँछ असाधारण रूप से लम्बी होती है। कभी–कभी तो इसकी पूँछ इसके शरीर से तीन गुना तक लम्बी देखी गई है। प्रजनन काल में इस बिल्ली मछली की मादा के शरीर पर संस्पर्शिकाओं (टेन्टकिल्स) की तरह पेंच उभर आते हैं। इसके अंडे इन्हीं पेचों पर लटके रहते हैं। कैलिकथिस नामक 16 सेंटीमीटर लम्बी बिल्ली मछली पत्तों के नीचे हवा के बुलबुलों का घोसला तैयार करती हैं तथा इसी में अंडे देती है। इसमें हमेशा नर अंडों की सुरक्षा करता है। इस काल में इसे परेशान किया जाये तो यह सुअर के समान आवाज निकालती है। इसके नवजात बच्चे टेडपोल जैसे होते हैं और इनका रंग काला होता है।

सागर में पाई जाने वाली एरिडाई परिवार की बिल्ली मछलियों के अंडे बहुत बड़े आकार के होते हैं। कुछ जातियों की मादा बिल्ली मछलियों के अंडों का आकार तो ढ़ाई सेंटीमीटर तक होता है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें नर हमेशा अपने मुँह में अंडे सेता है। एक माह में अंडों से बच्चे निकलते हैं। इस काल में यह पूरे समय कुछ नहीं खाता। अंडों से बच्चे निकलने के बाद भी यह उनकी सुरक्षा करता है तथा खतरा निकट होने पर अपने बच्चे को पुनः मुँह में भर लेता है।

बिल्ली मछली एक रोचक जलचर है। इसकी बहुत सी जातियों पर शोध किये जा रहे हैं तथा आशा की जाती है कि शीघ्र ही इनके सम्बन्ध में और भी रोचक एवं विलक्षण तथ्य प्राप्त होंगे। ❖

तिलक ने ली सीख

– दीनदयाल मुरारका

एक बार दादाभाई नौरोजी किसी मुकदमे के सिलसिले में लंदन गए थे। उनके साथ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भी थे। लंदन में ठहरने का खर्च काफी ज्यादा था। इसलिए खर्च कम करने के लिहाज से वे शहर के पास एक गाँव में चले गए। दादाभाई नौरोजी आदतन सुबह जल्दी उठ जाते थे और अपना पूरा काम समय पर निपटा लेते थे।

एक दिन की बात है। दादाभाई नौरोजी रोज की तरह सुबह जल्दी उठकर अपने जूतों पर पॉलिश करने बैठ गए। जब उन्होंने जूतों पर पॉलिश कर ली तो उनके मन में विचार आया कि तिलक के जूते भी गंदे होंगे। क्यों न उन्हें भी पॉलिश कर दिया जाए और वह तिलक के जूतों पर पॉलिश करने लगे। वे अभी तिलक के जूते चमका ही रहे थे कि लोकमान्य की आँखें खुल गईं। जब उन्होंने देखा कि दादाभाई नौरोजी उनके जूते पर पॉलिश कर रहे हैं तो वे दौड़कर उनके पास गए और जूते उनके हाथों से छीनते हुए कहा, ''आप यह क्या कर रहे हैं? नौकर आएगा तो जूतों पर पॉलिश कर देगा। आप जूते पॉलिश न करें। आप जैसे व्यक्ति का मेरे जूतों को हाथ लगाना, मेरे लिए बेहद शर्म की बात है।''

दादाभाई नौरोजी ने तिलक से कहा, ''जूते सब एक जैसे होते हैं। जैसा मेरा जूता वैसा आपका। जब अपने जूतों को चमका सकता हूँ तो आपके जूते पॉलिश करने में क्या दिक्कत। जहाँ तक नौकर के जूते साफ करने का सवाल है, तो मेरा मानना है कि व्यक्ति को जितना संभव हो सके, स्वावलंबी होना चाहिए। दूसरों पर कम से कम निर्भरता रखनी चाहिए।' इतना सुनना था कि तिलक खुद मुस्कुराते हुए अपने जूतों पर पॉलिश करने बैठ गए। जीवन में हमें जहाँ तक संभव हो, अपना काम स्वयं करने की कोशिश करनी चाहिए। खुद का काम करने में किसी प्रकार की झिझक नहीं होनी चाहिए। ❖

नया साल

– विद्या प्रकाश

नया साल है, नयी बात है,
आओ खेलें धूम मचायें।
डाल–डाल पर डोल–डोलकर,
तितली जैसा मन मुस्कायें।।

पूरब दिशा में निकला सूरज,
सोने की थाल सा।
गाँव–गाँव में सुगन्ध फैले,
गंवई चमकीले गुलाब का।।

नई आस है, नया उल्लास है,
मन मगन मौज मनायें।
नया साल है, नयी बात है,
आओ खेलें धूम मचायें।।

डार–डार पर भोर की लाली,
डगर–डगर पर किरन–किरन।
बीत गयी है रजनी काली,
सन सनासन पवन–पवन।।

लहर–लहर पर डगर–डगर पर,
नवसंगीत हम रच जायें।
नया साल है, नयी बात है,
आओ खेलें धूम मचायें।।

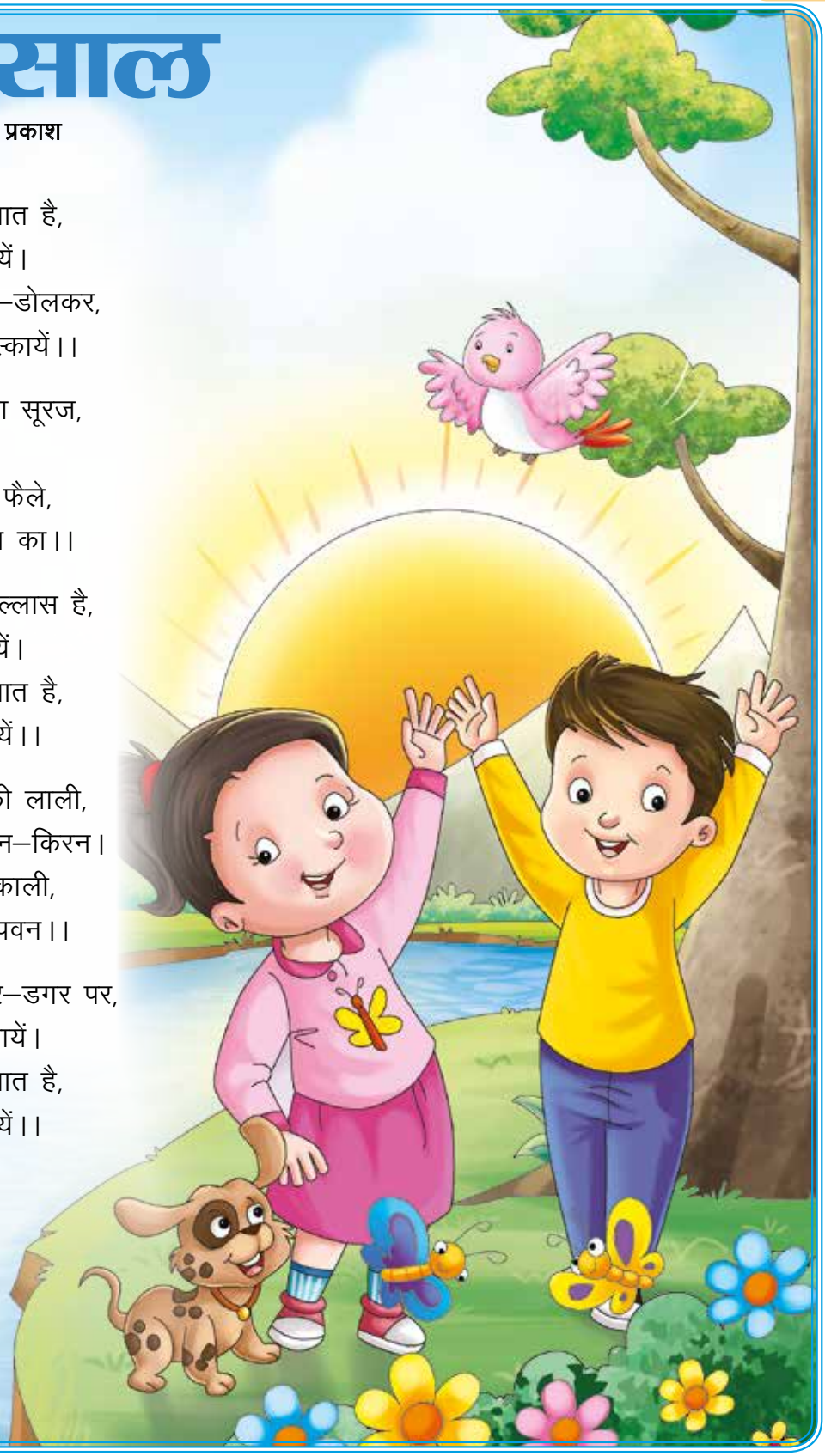

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
-अजय कालड़ा

हम्म... यम्मी, मुझे तो रोज़ यही खाना पसंद है माँ।
देखो बेटा, घर में बना खाना न खाने का नतीजा। पड़ गई ना अब तुम बीमार।
हाँ मम्मी ...!!
अब तो तुम्हें हम सबको खाना ही पड़ेगा।

हम सब तो तुम्हारे मित्र हैं। हम तो चाहते हैं कि तुम जल्दी ठीक हो जाओ।
... पर माँ ने कहा था कि मुझे कई दिनों तक कड़वी दवाईयाँ खानी पड़ेंगी।
अगर तुम हमारी बात मानोगी तो जल्दी अच्छी हो जाओगी।
पर कैसे?
देखो मैं हूँ घीया, विटामिनों की खान और पचने में भी आसान।
घीया... ? हाँ माँ भी तुम्हारे लिए यही बोलती है।

मुझे खाने से तुम्हारी आँखों की रोशनी भी बढ़ जाएगी।
हम सभी बहुत पौष्टिक हैं।
माँ... मैं आज से सभी सब्जियाँ खाऊँगी और आपको शिकायत का मौका नहीं दूँगी।

गलती

–प्रियंका

साहिल इन दिनों खेलकूद में मस्त था। वार्षिक परीक्षा में अभी दो–तीन महीने बाकी थे। स्कूल में उसका ज्यादातर समय खेल के मैदान में ही बीतता था। उसके सहपाठी उसे कक्षा में आने के लिए कहते तो वह कोई न कोई बहाना बनाकर खेल में लग जाता।

दरअसल साहिल अपने आपको बहुत होशियार समझता था। उसका मानना था कि परीक्षा जब सिर पर आ जाए तभी तैयारी करनी चाहिए। साहिल अब तक ऐसा ही करता आया था।

एक दिन साहिल अपने दोस्त देवेन के घर गया। देवेन उस समय पढ़ाई कर रहा था। उसे पढ़ता देख साहिल पहले तो खूब हँसा। फिर बोला– अभी तो परीक्षा में काफी समय है। परीक्षा से एक हफ्ते पहले पढ़ना चाहिए। ऐसे में पढ़ा हुआ याद रहता है।

साहिल के सभी दोस्त स्कूल में थोड़ा बहुत खेलने के साथ क्लास की पढ़ाई भी करते थे। लेकिन साहिल स्कूल में ज्यादातर खेलता ही रहता। क्लास में भी वह ध्यान से नहीं पढ़ता था। स्कूल से लौटकर आता तो घर पर 'वीडियो–गेम' खेलने लगता।

शाम होते ही वह मैदान में दोस्तों के साथ खेलने चला जाता। साहिल के सभी दोस्त तो शाम को एक–दो घंटे खेलकर घर जाकर पढ़ने लगते। लेकिन साहिल खेलकर घर आता तो खा–पीकर सो जाता।

अब वार्षिक परीक्षा में एक सप्ताह रह गया था। साहिल ने अब जोर–शोर से पढ़ाई शुरू कर दी। उसने अब खेलना–कूदना, यहाँ तक कि घर से बाहर निकलना तक छोड़ दिया था। उसने सबसे मिलना–जुलना भी बन्द कर दिया था। पढ़ते–पढ़ते साहिल को अब खाने–पीने और सोने तक का होश न रहता। उसका स्वभाव अब कुछ चिड़चिड़ा–सा हो गया था। उसे परीक्षा की चिन्ता सताने लगी। अगले दिन परीक्षा थी और उसे कुछ भी नहीं आता था। वह पूरी तरह निराश हो गया।

महीने भर बाद जब परिणाम आया तो वह रोने लगा। वह फेल हो गया था। शाम हो आई थी। साहिल अभी भी एक पेड़ के नीचे बैठा रो रहा था। साहिल का दोस्त देवेन बगल से गुजर रहा था। साहिल को रोता देख वह उसके पास गया और बोला– "क्या बात है साहिल?"

साहिल ने सुबकते हुए पूरी बात बताई– मैंने पढ़ने की बहुत कोशिश की लेकिन मैं फेल हो गया।

देवेन ने उसे चुप कराते हुए कहा– साहिल, जब परीक्षा सिर पर आ जाए तब हड़बड़ी में पढ़ने से कुछ नहीं होता।

समय पर पढ़ना और खेलना चाहिए। अति हर चीज की बुरी होती है।

साहिल को देवेन की बात बुरी नहीं लगी। देवेन ने साहिल को बड़े प्यार से समझाया– पूरे साल हमें खेल के साथ पढ़ाई पर भी ध्यान देना चाहिए। जिससे परीक्षा के समय दिमाग पर ज्यादा दबाव नहीं पड़ता।

देवेन ने साहिल को सांत्वना दी और उसे घर जाने के लिए कहा। साहिल ने घर जाने से मना कर दिया। साहिल को घर जाने में बड़ी शर्म महसूस हो रही थी। अब देवेन ने उसे बड़े अपनेपन से समझाया– ऐसी गलती मत करना साहिल, घर जाकर मम्मी–पापा को पूरी बात बताओ और अपनी गलती स्वीकार कर लो। तुम्हारे मम्मी–पापा तुम्हें माफ कर देंगे क्योंकि वे तुमसे प्यार करते हैं।

इतने में पीछे से आवाज़ आई– ''हाँ बेटा, हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।''

यह साहिल के माता–पिता थे। साहिल जब घर नहीं पहुँचा तो वे उसे ढूँढते–ढूँढते यहाँ चले आए थे।

मम्मी–पापा को देख साहिल रोने लगा। मम्मी ने प्यार से सिर पर हाथ फेरा और कहा– कोई बात नहीं साहिल। फिर से तैयारी करो। समय पर पढ़ाई करो और खेलो। तुम जरूर पास हो जाओगे।

साहिल मम्मी से लिपटकर रोने लगा। उसने वादा किया कि वह समय पर खेलेगा और पढ़ाई करेगा। उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था।

प्यारे बच्चो! कहीं आप भी साहिल की तरह तो नहीं; अगर हो तो अभी सम्भल जाइए क्योंकि आपने देखा कि साहिल का एक साल तो खराब हुआ ही और वह अपने दोस्तों से भी एक क्लास पीछे रह गया। आपकी भी परीक्षा आने वाली है इसलिए आप भी अभी से पढ़ना शुरू कर दो। ❖

क्या आप जानते हैं?

- महाभारत का पुराना नाम जयसंहिता था।
- मलेशिया में ऐसे पौधे पाये जाते हैं जो आग बरसाते हैं।
- सूर्य की किरणें 8 मिनट 20 सैंकेड में धरती पर पहुँचती हैं।
- सन् 1854 में भारत में डाक सेवा शुरू की गई थी।
- सभी प्राणियों में सबसे अधिक आयु कछुए की होती है वह 300 वर्ष तक जीवित रहता है।
- सिकन्दर के गुरु का नाम अरस्तु था।
- कोलम्बिया देश का नाम क्रिस्टोफर कोलम्बस के नाम पर रखा गया है।
- बृहस्पति हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है। बृहस्पति का धरातल ठोस नहीं है।
- डायनासोर के अवशेष सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी में पहचाने गए थे। लक्षद्वीप लगभग 36 छोटे–बड़े द्वीपों का समूह है।
- लक्षद्वीप के लोग मलयालम बोलते हैं।
- कॉकरोच शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के होते हैं।
- चारमीनार हैदराबाद में स्थित है इसका निर्माण सन् 1591 में हुआ था।
- भारत के केरल राज्य में काजू का सर्वाधिक उत्पादन होता है।
- भारत के प्रथम लोकसभा अध्यक्ष गणेश वासुदेव मावलंकर थे।
- मछलियों की आँख पर पलक नहीं होती।
- जलीय प्राणी व्हेल संसार का सबसे बड़ा प्राणी है।
- सिनेमा क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दादा साहेब फालके पुरस्कार सबसे पहले देविका रानी को 1969 में दिया गया।
- द्रास (जम्मू–कश्मीर) दुनिया का दूसरा सबसे ठंडा स्थान है।
- विश्व पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल को मनाया जाता है।
- मच्छर अन्य रंगों के मुकाबले नीले रंग की तरफ ज्यादा आकर्षित होते हैं।
- बाँस का पौधा एक दिन में 36 इंच (तीन फीट) तक बढ़ सकता है।

आ गया फिर जाड़ा

– बद्री प्रसाद वर्मा

चलकर हिम पर्वत से,
आ गया फिर जाड़ा।
बस्ती बस्ती गाँव शहर,
छा गया फिर जाड़ा।।

गर्मी से छुटकारा सबको,
दिला गया फिर जाड़ा।
दिन छोटा और रात बड़ी,
बना गया फिर जाड़ा।।

इनर, स्वेटर, कोट और जाकेट,
पहना गया फिर जाड़ा।
शीत लहर से सबका,
दिल डरा गया जाड़ा।।

चारों तरफ कोहरे की चादर,
फैला फिर जाड़ा।
पत्तों पर फिर ओस की बूँदें,
बिखरा गया फिर जाड़ा।।

सर्दी की बात

– सुनील कुमार शर्मा

हा–हा सर्दी, हू–हू सर्दी,
सर्दी ने तो, हद ही कर दी।

किट–किट–किट–किट,
दाँत बज रहे।
थर–थर–थर–थर,
बदन काँप रहे।

सूरज कर बैठा है छुट्टी,
सर्दी ने तो, हद ही कर दी।।

सुबह उठने को जी न चाहे,
अब कम्बल और रजाई भाये।
दुबके बिस्तर में अब सब,
न जाने निकलेंगे कब।

सूरज करता जा गर्म तू भट्टी,
नहीं तो कर देंगे हम कुट्टी।।

तितलियों का अनोखा संसार

– विद्या प्रकाश

बगीचों में फूलों पर मंडराने वाली रंग–बिरंगी और सुन्दर पंखदार तितलियाँ देखने में तो आकर्षक होती ही हैं। वे परागण के माध्यम से नवीन पौधों के पनपने तथा बीजों के अंकुरण में भी सहायक होती हैं।

इन तितलियों के जन्म तथा विकास की प्रक्रिया रोचक है तथा अण्डे से वयस्क तितली बनने तक इस कीट को चार अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। वनस्पति विज्ञान की भाषा में इस प्रक्रिया को मेटाफार्मोसिस (कायान्तरण) कहा जाता है। इस परिवर्तन प्रक्रिया के प्रत्येक पड़ाव में उसके आकार, रंग तथा जैविक संरचना में बिल्कुल बदलाव आ जाता है। तितली के वृक्षों तथा लताओं की हरी पत्तियों पर रेंगने वाले शिशु को देखकर व्यक्ति अन्दाजा भी नहीं लगा सकता कि एक दिन यह सुन्दर तितली की शक्ल में इन्द्रधनुषी पंख फड़फड़ाते हुए फूल पर मंडरायेगा।

मादा तितली किसी ऐसे पौधे अथवा पेड़ पर अण्डे देती है जिसकी पत्तियाँ उसके शिशु जिसे अंग्रेजी में 'कैटरपिलर' तथा हिन्दी में 'इल्ली' कहा जाता है, के लिए बढ़िया खुराक साबित हो। कुछ समय के उपरान्त कैटरपिलर अण्डों से बाहर आ जाते हैं तथा फिर शुरू होता है उसका जीवन चक्र। अण्डों से बाहर आने वाला कैटरपिलर बहुत भुक्खड़ होता है तथा हरी पत्तियों से भोजन ग्रहण कर बहुत तेजी से बढ़ता है। इसकी शारीरिक वृद्धि इतनी तेजी से होती है कि मोटापे से कैटरपिलर की त्वचा फट जाती है। त्वचा फटने से उसकी जान को कोई खतरा नहीं होता। कुदरत ने ऐसी

व्यवस्था कर रखी है कि बाल्यावस्था की बाहरी त्वचा के नीचे छिपी नवीन त्वचा सामने आ जाती है। जिसमें उसके बढ़ते शरीर का भार तथा विस्तार सम्भालने की अधिक क्षमता पायी जाती है।

प्रत्येक कैटरपिलर अपने चारों तरफ एक कठोर खोल जैसा बनाता है जिसे बॉटनी की शब्दावली में 'प्यूपा' कहा जाता है। प्यूपा के अन्दर इसका शरीर अर्द्ध ठोस अवस्था में परिवर्तित हो जाता है। प्यूपा अपने अन्दर उसके शरीर को किसी मजबूत तिजोरी की तरह सम्भाले तथा बाह्य प्रभावों से बचाये रखता है ताकि इसमें होने वाले नवीन परिवर्तनों के दौरान वह किसी बाहरी नुकसान और खतरों से पूरी तरह सुरक्षित रह सके।

प्यूपा के भीतर मौजूद कीट का अर्द्ध ठोस शरीर क्रमशः तितली के रूप में परिवर्तित होने लगता है। जब प्यूपा के अन्दर मौजूद तितली इसे तोड़कर बाहर निकलती है तो उसके पंख काफी नरम तथा सिकुड़े हुए होते हैं। सूरज की गर्मी में इसके पंख सूखकर फैल जाते हैं तथा मजबूत भी हो जाया करते हैं। इसके कुछ ही घण्टों के बाद एक नन्हीं सी तितली बगीचे में डाल पर मंडराने तथा पुष्पों के मकरन्दपान के लिए तैयार हो जाती है।

मादा तितली अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में 50,000 से अधिक अण्डे देती है। एक फूल से दूसरे फूल तक उड़–उड़कर मकरन्दपान करने वाली तितलियाँ परागण में सहायक होती हैं। ये फूलों का मीठा रसपान स्वाद के लिए नहीं करती। इससे उन्हें उड़ने के लिए आवश्यक शक्ति प्राप्त होती है। नन्हीं–सी दिखने वाली तितली लम्बी दूरी की उड़ान भरने में चैम्पियन होती है। प्रतिवर्ष सर्दी में अनुकूल मौसम तथा आहार की तलाश में 'मोनार्क बटरफ्लाई' नामक तितली कनाडा से मैक्सिको तक का लगभग 3500 किलोमीटर लम्बी यात्रा पर निकल जाती है। वैसे तो तितली बहुत शरीफ तथा शान्तिप्रिय होती है लेकिन इसकी एक किस्म 'पीकॉक बटरफ्लाई' शिकारी चिड़ियों में दहशत पैदा कर देती है।

दरअसल जब कोई शिकारी चिड़िया इसे खाने की लालच में नजदीक आती है तो वह अपने पंख फैला देती है जो दो खतरनाक घूरने वाली आँखों की तरह दिखते हैं। ❖

पढ़ो और हँसो

दो व्यक्ति एक पेड़ की डाल से लटके थे। तभी एक व्यक्ति नीचे गिर गया।
पहला बोला : क्यों थक गये?
दूसरा बोला : यार थका नहीं पक गया।

एक मोटे युवक ने अपने मित्र से कहा– मैं आजकल दौड़ने का अभ्यास कर रहा हूँ। एक बात तो बताओ पी.टी. ऊषा को तेज दौड़ने पर उड़नपरी कहते थे। मैं जब तेज दौड़ूँगा तो मुझे क्या कहेंगे?
मित्र बोला : उड़नखटोला।

लाली : अरे मोना आजकल तो तू अंग्रेजी बहुत बोलती है?
मोना : अरे दीदी पेपरों में मैंने अंग्रेजी का पूरा पेपर चबा लिया था।

कल्पना : (उपासना से) देख मोना अब बॉल नीचे नहीं आनी चाहिए वरना बॉल को मैं मम्मी–पापा के पास पहुँचा दूँगी।
उपासना : अरे! मम्मी–पापा भी बॉल खेलते हैं क्या?

अध्यापक : (छात्र से) 'परिभाषा' किसे कहते हैं?
छात्र : सर परियों की भाषा को परिभाषा कहते हैं।

अतुल : अरे भई तुमने तालाब में डूबते बच्चे को डूबने से बचाया और फिर बाहर निकालकर उसे मारा क्यों?
निखिल : अरे जब वहाँ सामने साफ लिखा था कि 'तैरना मना है' तो फिर वह तैरने क्यों गया?

गुड़िया : (अमन से) भैया, मैं बर्फ खाऊँगी।
अमन : गुड़िया, सर्दियों में बर्फ नहीं खाते हैं।
गुड़िया : भैया, मैं बर्फ गर्म करके खा लूँगी।

अध्यापक : 'संतोष आम खाता है।' इस वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो।
पप्पू ने अंग्रेजी में ट्रांसलेट किया– ' Satisfaction is General Account.'

एल. के. जी. के बच्चे को इम्तहान में जीरो मिला।
पिता : (गुस्से से) यह क्या है?
बच्चा : पापा, मैम के पास स्टार खत्म हो गए तो उन्होंने मुझे मून दे दिया।

अध्यापक : (छात्र से) क्या तुम बता सकते हो कि दर्द–नाक का क्या मतलब होता है?
छात्र : सर, नाक का दर्द। छात्र ने फौरन जवाब दिया।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

तीन मूर्ख ट्रेन से यात्रा कर रहे थे अचानक किसी ने चेन खींच दी।

गाड़ी रूकी तो पहला मूर्ख बोला – यार, गाड़ी लगता है पंक्चर हो गई।

दूसरा मूर्ख बोला– गाड़ी टायर बर्स्ट हो गया है।

तीसरा मूर्ख बोला– मैं नीचे उतरकर देखता हूँ। उसने देखा और आश्चर्य से बोला– अरे यार, गाड़ी के पहिये में से टायर ही निकलकर भाग गए।

श्यामू ने जॉब के पहले दिन कम्प्यूटर पर 11 घंटे काम किए।

बॉस (खुशी से) : वाह, पहला ही दिन और इतनी मेहनत। क्या–क्या काम किया आज बताओ?

श्यामू : पता नहीं कहाँ से खरीद लिया आपने ये कीबोर्ड। इसमें एबीसीडी आगे–पीछे थे तो वो सब सही किया है आज।

मम्मी : सुशील, आज जो पकौड़े हमने खाए हैं उनके बारे में अपने पापा को न बताना।

सुशील : मम्मी, नहीं बताऊँगा। अब देखो न मैं और पापा कई बार बाजार जाकर आइसक्रीम खाते हैं। क्या मैंने कभी इस बारे मे आपको बताया है?

नंदू : कल रात हमारे घर में चोर घुस आए और नकदी, जेवर वगैरह सब कुछ ले गए।

मित्र : लेकिन तुम तो हमेशा अपने साथ पिस्तौल रखते हो?

नंदू : अरे गनीमत समझो कि चोरों की नजर उस पर नहीं पड़ी वरना उससे भी हाथ धोना पड़ता।

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) तीन बुलाओ और तेरह आ जाएँ तो क्या किया जाए?

दूसरा पड़ोसी : फौरन 'नौ दो ग्यारह' हो जाने में ही भलाई है।

राजू ने अपनी माँ से शिकायत की– माँ, चन्दू ने मेरी हॉकी तोड़ दी।

–लेकिन क्यों?– माँ ने नाराज होते हुए पूछा।

–क्योंकि मैंने उसकी टांग पर मार दी थी।– राजू ने जवाब दिया।

एक मच्छर तूफान में फँसा हुआ था। रास्ते में एक पेड़ से लिपट गया। जब तूफान निकल गया तो मच्छर पसीना पोंछते हुए बोला– अगर आज मैं नहीं होता तो ये पेड़ गिर ही जाता।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

होड़

– हरदर्शन सहगल

चिड़िया का बच्चा छोटा था। अभी नया–नया उड़ना सीखा था। उस रात बर्फ पड़ी थी। ठंड एकदम से बढ़ गई थी। सब पक्षी अपने–अपने घोसलों में दुबके पड़े थे। किसी का भी बाहर निकलने का साहस नहीं हो रहा था।

चिड़िया के बच्चे का मन बहुत उदास हो चला। उसका दिल खुले आकाश में निकलने को मचल रहा था। दूर–दूर तक लम्बी उड़ाने भरने में उसे बड़ा मजा आता था। किन्तु आज ठंड के मारे कोई बाहर निकल ही नहीं रहा था।

सब सूरज के निकलने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

–हम बाहर निकलेंगे तो सूरज भी निकल आएगा।– उसने अपने साथियों से कहा– चलो चलो।

–हाय! इतनी ठंड में?– हमें तो और भी काम करने हैं परन्तु पहले सूरज तो निकल ले।– एक चिड़िया ने उत्तर दिया।

–मैं तो चला साथियों!– चिड़िया के बच्चे ने कहा– मैं निकलते हुए सूरज को देखूँगा। मैं सूरज का स्वागत करूँगा।

इतना कहकर चिड़िया का नन्हा बच्चा घर से निकल पड़ा।

दूर आकाश में लाली छाई हुई थी। वह समझ गया कि सूरज उधर ही है। पक्की बात है कि सूरज निकल चुका है। मगर बहुत से घने काले बादल सूरज का रास्ता रोके हुए हैं। वह बादलों से लड़ रहा है, संघर्ष कर रहा है।

–मैं भी बादलों का मुकाबला करूँगा।– चिड़िया के बच्चे ने सोचा और फिर सूरज की दिशा में उड़ चला। रास्ता साफ नहीं था। बादल नीचे आते जा रहे थे। धुएँ को भी ऊपर नहीं उठने दे रहे थे। पूरे रास्ते में धुंध छाई हुई थी।

लेकिन चिड़िया के उस नन्हें बच्चे ने किसी बात की परवाह नहीं की। उसने बादलों के बीच से रास्ता बनाया। इससे उसके पर भीग गये। सांस फूलने लगी किन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी।

उसने सोचा– सूरज थोड़ा निकलता है तो बादल उसे फिर ढक लेते हैं। सूरज घने बादलों से लड़ रहा है। वह बार–बार ऊपर उठता है। इसलिए काले बादल मेरा भी रास्ता नहीं रोक सकते।

वह चिड़िया का बच्चा, नये जोश में उड़ता गया। फिर सफेदे के ऊँचे पेड़ के सिरे पर जा बैठा।

उसने देखा। आकाश में ऊषा की लाली पूरी तरह से फैल चुकी है। सूरज निकल आया है। बादल छंट गये हैं। अंधकार हट गया है। चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैल गया है।

सूरज की विजय हुई। चिड़िया के उस नन्हें बच्चे की भी विजय हुई।

–जो विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारते। साहस और हिम्मत से काम लेते हैं। उन्हें सफलता मिल ही जाती है। ❖

हमको सैर कराती

– डॉ. परशुराम शुक्ल

सागर के भीतर पनडुब्बी,
हमको सैर कराती।

बच्चों बड़ी अनोखी गाड़ी,
आओ इसकी करें सवारी।
यह सागर के भीतर चलती,
बाहर भी आ जाती।।

सागर का संसार निराला,
बाहर उजली भीतर काला।

बड़े अनोखे इसके पौधे,
बुद्धि देख चकराती।।

शंख, केकड़ा, सीपी, कछुआ,
झींगा, स्क्विड, सील, टिलपिआ।
ह्वेल सरीखे बड़े जीव भी,
यह सबको दिखलाती।।

सागर के भीतर पनडुब्बी,
हमको सैर कराती।

मेले में

– राजेंद्र निशेश

बन्दर जी मेले में पहुँचे
साथ बन्दरिया उनके आई,
रंग–बिरंगा चश्मा पहना
बड़े प्रेम से फोटो खिंचवाई।

सेवा

– राजेंद्र निशेश

बन्दर से बन्दरिया बोली
अपनी माँ के घर जाऊँगी,
रूखा–सूखा खाकर के
माँ की सेवा कर आऊँगी।

गोरिल्ला

'– डॉ. विनोद गुप्ता

कुछ जानवरों की प्रजातियाँ मानव से मिलती–जुलती हैं। इन्हीं में से एक है गोरिल्ला। बिना पूँछ वाले ये बंदर एन्थ्रोपोइड वर्ग में आते हैं। एशिया और अफ्रीका के घने जंगलों में ये पाए जाते हैं।

कद में गोरिल्ला आदमी के बराबर होता है किन्तु वजन में ये इंसान से भारी होते हैं। काली त्वचा वाले ये गो. रिल्ला सामाजिक होते हैं तथा झुंडों में रहते हैं। शैशव अवस्था में बच्चे अपने माँ–बाप के पास ही रहते हैं। माता–पिता इन्हें पेड़ों पर सुलाते हैं और स्वयं जमीन पर। शांत स्वभाव वाला गोरिल्ला छेड़ने पर उग्र हो जाता है और मुँह से ढोल की भांति आवाज निकालने लगता है।

गोरिल्ला भी दुर्लभ जीव की श्रेणी में आते हैं। धीरे–धीरे इनकी संख्या कम हो रही है। इन्हें सुरक्षित और संरक्षित रखने के हर संभव उपाय किए जा रहे हैं।

गोरिल्ला जब तक छोटे होते हैं, सर्वभक्षी होते हैं यानी कीड़े–मकोड़े, अंडे, पत्तियाँ आदि खाते हैं। लेकिन बड़े होने पर वे पूर्णतः शाकाहारी हो जाते हैं।

पूर्वी जायरे व दक्षिण पश्चिम युगांडा के निम्न भूमि जंगलों और पूर्वी निम्न भूमि नर गोरिल्ला की खड़े हुए लम्बाई 5 फीट 9 इंच और वजन 165 किलोग्राम तक होता है। पश्चिम रवांडा दक्षिण–पश्चिम युगांडा और पूर्वी जायरे के ज्वालामुखी पर्वत शृंखला के पर्वतीय गोरिल्ला की लम्बाई 5 फीट 8 इंच और वजन 155 किलोग्राम तक होता है। ❖

तीन चीजें

❖ तीन चीजों में मन लगाने से फायदा होता है
– ईश्वर, मेहनत, विद्या।

❖ तीन का हमेशा सम्मान करना चाहिए
– माता–पिता, मेहमान, गुरु।

❖ तीन चीजों से हमेशा बचना चाहिए
– बुरी संगति, स्वार्थ, निन्दा।

❖ तीन चीजें जीवन में एक ही बार मिलती हैं
– माता–पिता, जवानी और मानव जन्म।

❖ तीन के लिए मर मिटो
– देश, सद्धर्म, मित्र।

❖ तीन बातें मत भूलो
– सद्उपदेश, उदारता, उपकार।

❖ तीन का संग्रह करो
– अच्छी पुस्तकें, अच्छे मित्र, अच्छे कार्य।

❖ तीन का सामना करो
– शत्रु, अत्याचार, संकट।

नवम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. कीर्ति — 12 वर्ष
   म.नं. 641, हुड्डा पार्ट–2,
   शाहबाद मारकंडा (हरियाणा)

2. दक्ष — 12 वर्ष
   पदमावती सोसाइटी,
   गोधरा (गुजरात)

3. हनिशा — 9 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी,
   गोधरा (गुजरात)

4. आरव मलूजा — 7 वर्ष
   म. नं. 147, प्रभदयाल ग्रोवर स्ट्रीट,
   जलालाबाद (वेस्ट)
   जिला : फाजिल्का (पंजाब)

5. हार्दिक इसरानी — 13 वर्ष
   माँ गायत्री नगर, बमरोली रोड,
   गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

मुस्कान लालवानी, अंशिका, धैर्य, नमन मोटवानी, जुरिका, भविका, देव रामचंदानी, यश, आरूही भोजवानी, चाँदनी, लहर, नैतिक मूलचंदानी, रैना, मीत बलवानी, यशिका देवजानी, हीर कलवानी

(गोधरा)

यक्षमिता, दक्षा पुण्या, प्रिया, सूर्यकांत, सुनांजलि मौर्य, प्रियांशु प्रिया, उन्नति अरोड़ा, कशिश, प्रज्ञा, स्वीटी भारती, अयान, कौस्तव पाल, हनी सिंह, आशीष कुमार, हिमांशु सौरव, खुशी कुमारी, सुमन, सूरज, निधि सिंह, वंशिका सथवारा, शिवांश यादव, निशांत, आयुष कुमार, सरोज दीपू, किरण

(भुज)।

जनवरी अंक रंग भरो

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 28 जनवरी, 2024 तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मार्च 2024 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

Download The App

Sant Nirankari Mission "SNM" App

The application is available for the iOS & Android smartphones.

Download on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

Scan QR code

Scan QR code to download Sant Nirankari Mission "SNM" App

For iOS Devices

For Android Devices

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed
Customer Care : **9818883394**